सत्र – 2021–22
कक्षा – चार

प्रथम सत्र

पाठ्य – सूची

			पृष्ठ संख्या
अप्रैल–मई	●	खुशियाँ बाँटें सारे जग को (पठित पद्यांश)	3
	●	चाँद की सैर (पठित गद्यांश)	6
	व्याकरण	वर्ण–विचार	9
		सप्ताह के दिन	17
		महीनों के नाम	17
		बिल्ली और लोमड़ी (अपठित गद्यांश)	19
जुलाई	●	जो कोई न कर सके (पठित गद्यांश)	21
	व्याकरण	हिंदी अंक (1–50)	24
		संज्ञा	27
		पत्र लेखन	31
अगस्त/सितंबर	●	बरगद का वृक्ष (पठित गद्यांश)	33
	●	हम भी वापस जाएँगे (पठित पद्यांश)	36
	व्याकरण	लिंग	39
		वचन	41
		विशेषण	43
		सारस और लोमड़ी (अपठित गद्यांश)	48

द्वितीय सत्र

अक्तूबर	✹	ऐसे थे बापू (पठित गद्यांश)	50
	व्याकरण	विराम चिह्न	53
		सर्वनाम	55
		कहानी लेखन	59
		भेड़िया आया, भेड़िया आया (अपठित गद्यांश)	61
नवंबर	✹	सफल खिलाड़ी (पठित गद्यांश)	63
	✹	डरना कभी न जाना (पठित काव्यांश)	66
	व्याकरण	अनुच्छेद लेखन	69
दिसंबर	✹	चतुर चरवाहा (पठित गद्यांश)	70
	✹	हमारी नाव चली (पठित काव्यांश)	73
	व्याकरण	क्रिया	77
		अनुच्छेद लेखन	80
जनवरी/फरवरी	✹	नींद की करामात (पठित गद्यांश)	81
	व्याकरण	अशुद्धि शोधन	85
		कहानी लेखन	89
		ऋषि और चुहिया (अपठित गद्यांश)	91
		कहानी लेखन	93
		कहानी लेखन	95
		विलोम शब्द	97
		पर्यायवाची शब्द	101
		मुहावरे	103
		चित्र वर्णन	106
		संवाद लेखन	107
		विज्ञापन लेखन	109
		आशुभाषण	110
		कहानियाँ	111
		अनुच्छेद लेखन	123
		अपठित गद्यांश	125
		कहानी लेखन	131

अप्रैल-मई

खुशियाँ बाँटे सारे जग को... (पठित पद्यांश)

अंधकार को दूर भगाकर,
कर देता दीपक उजियारा।
फूल लुटाकर अपनी खुशबू,
महका देते उपवन सारा।

मीठे फल और छाया देने,
पेड़ सदा झुक जाते हैं।
बादल भी लाकर के पानी,
सबकी प्यास बुझाते हैं।

परोपकार का जीवन इनका,
सचमुच बड़ा महान है।
खुशियाँ बाँटे सारे जग को,
वही सच्चा इनसान है।

प्रश्न–1 काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

क. यह कविता किसने लिखी है?

....

....

ख. दीपक का क्या महत्त्व है?

....

....

ग. पेड़ कैसे उपकार करते हैं?

....

....

घ. सच्चा इनसान कौन है?

....

....

ङ काव्यांश में से चार संज्ञा शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

1. .... 2. ....

3. .... 4. ....

प्रश्न–2 शब्दों के अर्थ लिखिए–

क. सुरीली .... ख. अंधकार ....

ग. उपवन .... घ. इनसान ....

प्रश्न–3 वाक्य बनाइए ।

क. किरणें ....

....

ख. जीवन ....

....

ग. इंसान ....

....

घ. जग ....

....

ङ छाया ....

....

प्रश्न–4 एक दिन जब मैं थक कर पेड़ के नीचे सो गया तो पेड़ मेरे सपने में आकर बोला ...(4 – 5 पक्तियों में लिखिए।)

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

चाँद की सैर (पठित गद्यांश)

''चाँद की ज़मीन पर बहुत–सी दरारें और गड्ढे हैं क्योंकि चाँद की ज़मीन ज्वालामुखियों से बनी है। एक मज़े की बात और बताऊँ? चाँद पर पंद्रह दिन तक लगातार दिन और उजाला रहता है और पंद्रह दिन तक रात।'' ''फिर तो वहाँ मज़े से खूब सो सकते हैं,'' दोनों बच्चे चहकते हुए बोले।

''अच्छा चलो, अब तुम लोग सो जाओ। बहुत रात हो गई है। कल तुम्हें एक पुस्तक दूँगा– 'चाँद की सैर'। उसे पढ़ना और चाँद के बारे में ढेर सारी बातें मालूम करना।'' दादा जी ने दोनों को चादर ओढ़ाकर सुला दिया। सुबह उठते की माधव और लता दोनों पुस्तक की ओर लपके। दोनों ने आगे की कहानी पढ़नी शुरू की।

चाँद पर गुरुत्वाकर्षण शक्ति बहुत कम है।

अब यह कौन–सी शक्ति है? एक कंकड़ को आसमान की तरफ़ फेंको तो वह तेज़ी से धरती की तरफ़ खिंचा चला आएगा। यही गुरुत्वाकर्षण शक्ति है। यह शक्ति चाँद में बहुत कम है। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का छटवाँ भाग चाँद में है।

प्रश्न–1 गद्यांश पढ़कर उत्तर लिखिए -

क. चाँद की ज़मीन पर दरारें और गड्ढे क्यों हैं?

....

....

ख. दादाजी ने बच्चों को पढ़ने के लिए कौन सी पुस्तक दी?

....

....

ग. 'गुरुत्वाकर्षण' शक्ति क्या है?

....

....

घ. गद्यांश में से पर्यायवाची शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

क. चंद्रमा .... ख. किताब ....

ग. धरती .... घ. प्रातः ....

प्रश्न–2 शब्दों के अर्थ लिखिए :-

क. निहारना .... घ. पौष्टिक ....

ख. आवश्यकता .... ङ विशेष ....

ग. उपलब्धि .... च. वस्त्र ....

प्रश्न–3 वाक्य बनाइए ।

(i) शक्ति ....

....

(ii) छलाँग ....

....

(iii) स्वयं ....

....

(iv) पौष्टिक ....

....

(v) आकृति ....

....

प्रश्न–4 चाँद पर एक छोटी सी कविता 6 – 8 पंक्तियों में लिखिए।

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

वर्णमाला (Alphabet)

क्रम से दिए गए वर्ण वर्णमाला कहलाते हैं।
हमारी हिंदी की वर्णमाला में हैं - स्वर और व्यंजन

आओ दोहराएँ -

स्वर

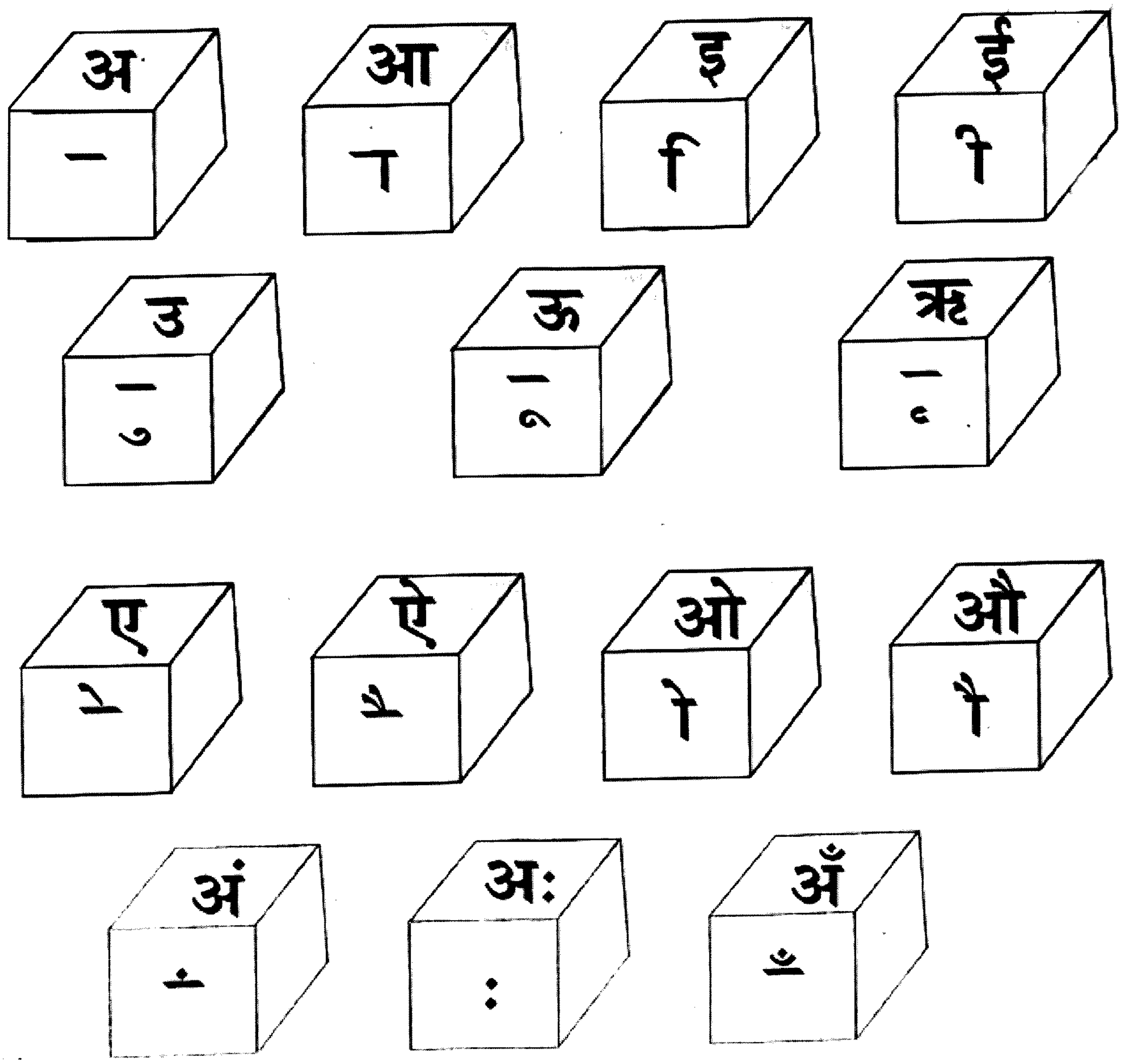

व्यंजन

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ श्र

• नीचे एक टोकरी में माली ने गलती से सारे फूल मिला दिए हैं।

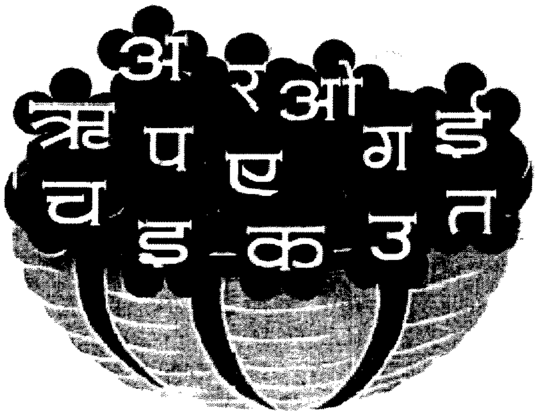

अब हमें उन्हें छाँटकर अलग-अलग टोकरियों में रखना है।
देखते हैं, पहले कौन रखता है?

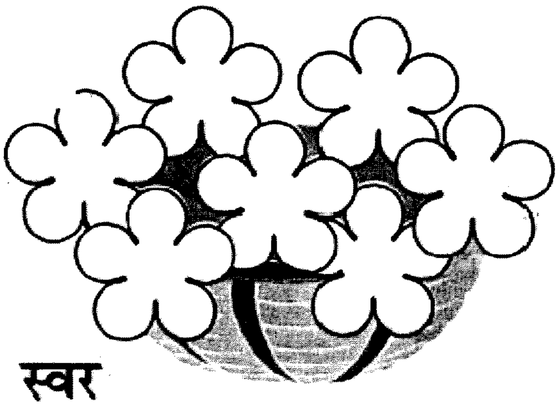

स्वर

व्यंजन

1. व्यंजनों के साथ दिए गए स्वरों की मात्रा जोड़कर लिखिए-

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
ध	....	....	....	....	....	....	....	....	....	....
प	....	....	....	....	....	....	....	....	....	....
न	....	....	....	....	....	....	....	....	....	....
स		....	....	....	....	....	....	....	....	....

2. नीचे लिखी मात्राओं से दो-दो शब्द लिखिए –

ा	....	....
ि	....	....
ु	....	....
े	....	....
ौ	....	....
ी	....	....
ू	....	....
ृ	....	....
ै	....	....
ो	....	....

संयुक्त वर्ण

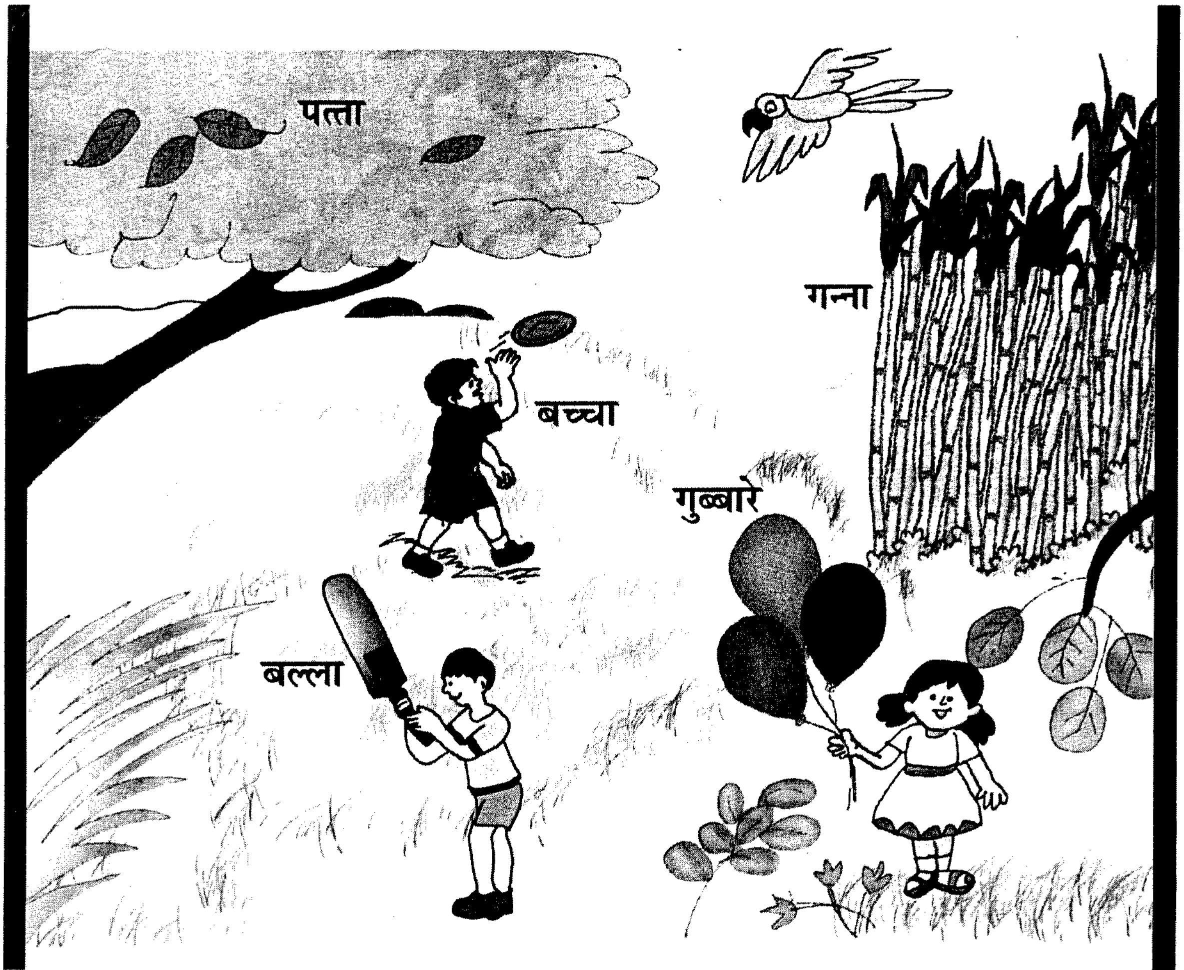

कुछ शब्दों में कोई-कोई वर्ण हलका बोला जाता है। जो वर्ण हलका बोला जाता है, वह अ के बिना होता है और वह अपने अगले वर्ण के साथ मिलता है। इसे संयुक्त वर्ण कहते हैं। जैसे–

पक्का	**मक्खन**	**क्यारी**	**डिब्बा**	**छत्ता**
चिट्ठी	**भुट्टा**	**प्यास**	**गुड्डा**	**गद्दी**

3. सीढ़ी में क्रम से व्यंजन लिखो -

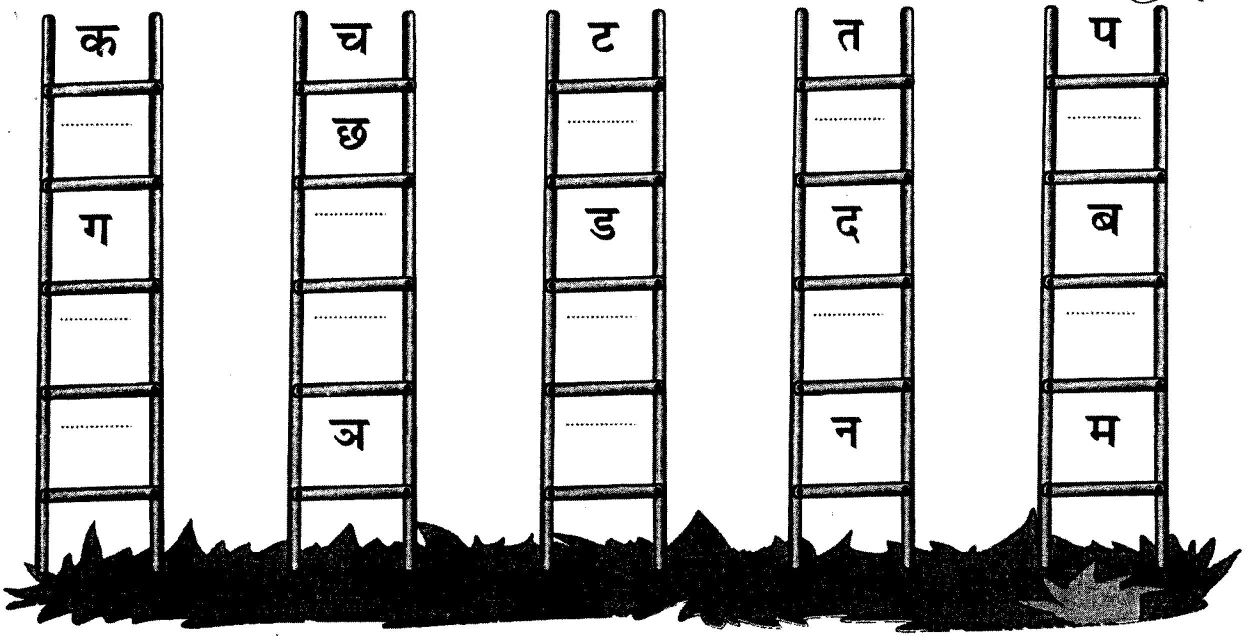

4. ड़ या ढ़ लगाकर शब्द पूरे करो–

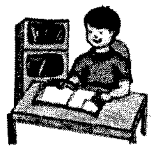 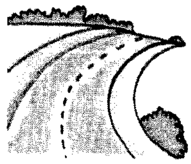

पेड़   च....ना   प....ना   स....क

5. श या स लगाकर शब्द पूरे करो–

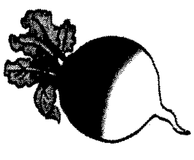 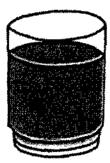 17

शलगम   ....पेरा   ....रबत   ....त्रह

6. ब या व लगाकर शब्द पूरे करो–

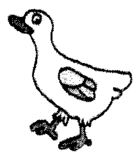 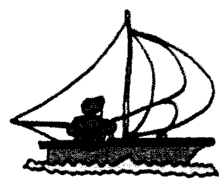

बरतन   ....न   ....तख   ना....

1. चित्र देखकर शब्द लिखो–

ल्ल — दिल्ली, बिल्ली

क्क — पक्का, ...

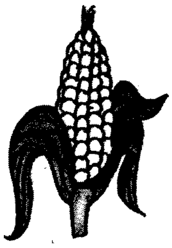

ब्ब — धब्बा, ...

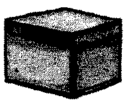

त्त — पत्ता, ...

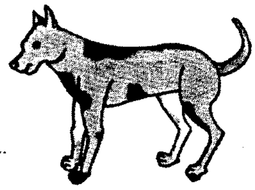

न्न — पन्ना, ...

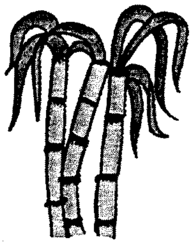

च्च — कच्चा, ...

2. चित्रों के नाम पूरे करो–

गुब्बारा

च..................

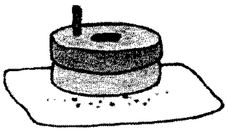

चि..................

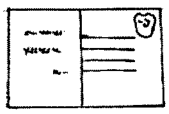

प..................

25

पु..................

ल..................

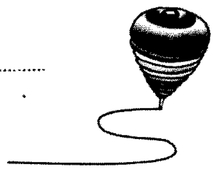

संयुक्त व्यंजन जोड़कर नए शब्द बनाइए - (दो - दो)

1.	द्	+	ध	=	द्ध	–	....
2.	क्	+	का	=	क्का	–	....
3.	च्	+	छ	=	च्छ	–	....
4.	त्	+	ता	=	त्ता	–	....
5.	प्	+	य	=	प्य	–	....
6.	ब्	+	ब	=	ब्ब	–	....

दिन और महीने (Days and Months)

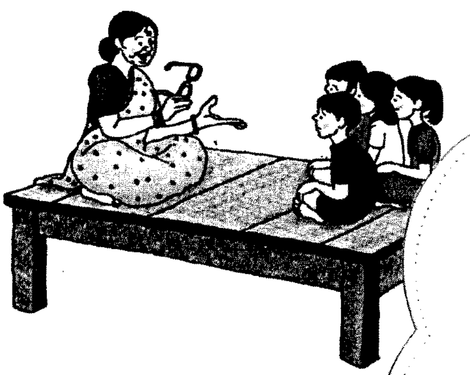

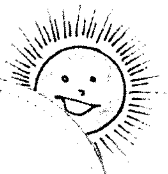

बच्चे जब-जब हुए उदास,
जा बैठे काकी के पास।
छह दिन बाद आता रविवार
छुट्टी होती एक ही वार
बच्चों का यह देख विचार
बोलीं काकी चश्मा उतार
सुनो-सुनो एक पते की बात
सप्ताह में दिन होते सात।

→ सप्ताह के दिन

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार

→ बारह महीने

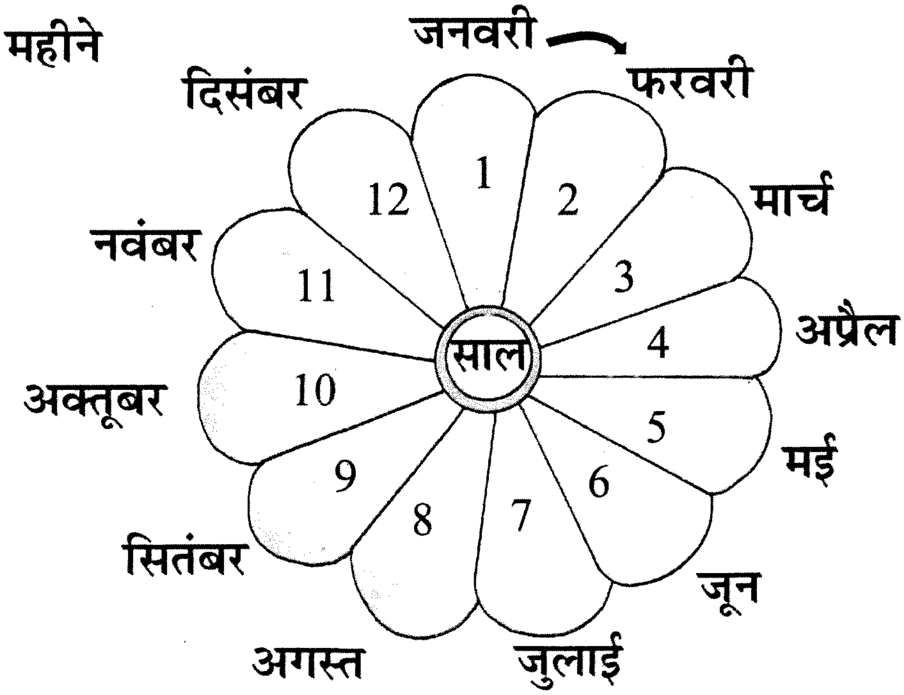

→ रविवार को इतवार भी कहते हैं।

→ बृहस्पतिवार को गुरुवार और वीरवार भी कहते हैं।

1. खाली स्थान भरिए -

(क) सप्ताह का पहला दिन .... होता है।

(ख) सप्ताह का चौथा दिन .... होता है।

(ग) छुट्टी का दिन .... होता है।

(घ) सोमवार के बाद .... आता है।

2. दिए गए प्रत्येक दिन के पहले और बाद के दिन का नाम लिखिए-

(क) .... मंगलवार ....

(ख) .... रविवार ....

(ग) .... वीरवार ....

(घ) .... शनिवार ....

3. खाली स्थान भरकर महीने पूरे कीजिए -

जनवरी .... अप्रैल .... जून ....

अगस्त .... अक्तूबर .... दिसंबर

अपठित गद्यांश

बिल्ली और लोमड़ी

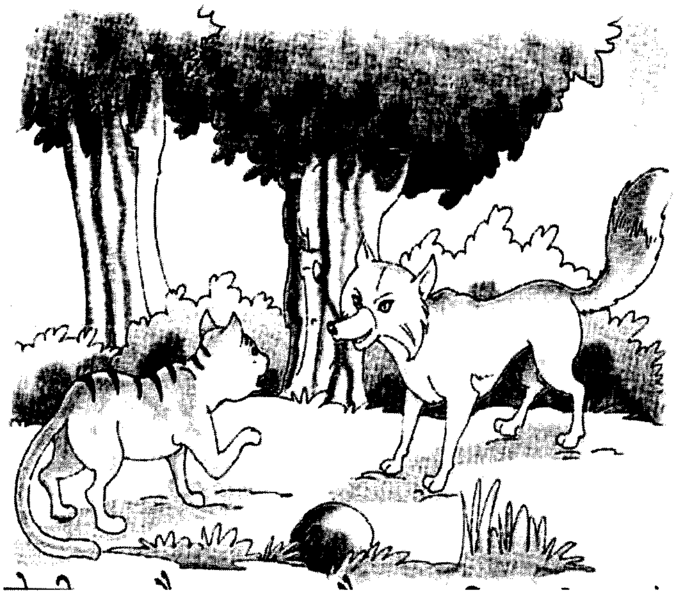

एक लोमड़ी जंगल में घूम रही थी। तभी भागती हुई एक बिल्ली उधर आई। बिल्ली बोली–बहन, उधर मत जाओ। वहाँ शिकारी कुत्ते हैं।

लोमड़ी पूँछ फुलाकर बोली–कौन डरता है उन शिकारी कुत्तों से! मैं उनसे बचने के सौ तरीके जानती हूँ।

बिल्ली बोली – बहन, मुझे भी सिखा दो। लोमड़ी हँसी। बोली – क्यों? क्या तुम्हें कुछ नहीं आता?

बिल्ली ने उत्तर दिया – मुझे तो बस एक तरीका आता है?

तभी कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आने लगी। बिल्ली दौड़कर पेड़ पर चढ़ गई। लोमड़ी भागने लगी। कुत्तों ने उसे पकड़ लिया।

अभ्यास

उत्तर लिखिए–

(क) जंगल में घूमती लोमड़ी से बिल्ली ने क्या कहा?

....

....

(ख) कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनकर बिल्ली ने क्या किया?

....

....

(ग) अंत में लोमड़ी के साथ क्या हुआ?

....

....

(घ) कहानी के अनुसार लोमड़ी एवं बिल्ली के स्वभाव की एक-एक विशेषता लिखिए।

लोमड़ी – ....

बिल्ली – ....

जुलाई

जो कोई न कर सके (पठित गद्यांश)

एक दिन बीरबल गली से गुज़र रहे थे। गली में बहुत से बच्चे खेल रहे थे। वे उनसे बोले–बच्चो! इधर आओ! तुरंत बच्चों की एक टोली आकर खड़ी हो गई।

''बच्चो! मेरा एक काम कर दोगे?''

''हाँ–हाँ, बताइए, कर देंगे।''

''यह गढ़ देखते हो ना! इसकी बगल में मिट्टी का एक बड़ा सा ढेर लगा दो। जो एक तसली मिट्टी डालेगा उसे एक पाई मिलेगी, और जो दो डालेगा उसे दो पाइयाँ मिलेंगी।''

बच्चे यानी कि चमत्कार! कुछ क्षणों में ही मिट्टी का ढेर लग गया। फिर दो पल और बीतने को आए कि वह ढेर गढ़ के कँगूरे को छूने लगा।

प्रश्न.1 गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

क) बीरबल कहाँ से निकल रहे थे?

....

....

ख) बीरबल ने बच्चों से क्या करने के लिए कहा और उस काम के लिए बच्चों को क्या दिया?

....

....

ग) गद्यांश में से पर्यायवाची शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

एकदम से .... क्षण ....

कार्य .... किला ....

प्रश्न 2 वचन बदलिए :-

गली .... पाई ....

बच्चा .... टोली ....

प्रश्न 3 अकबर - बीरबल की कोई और कहानी जो आपको अच्छी लगी और क्यों? (4 – 5 पक्तियों में लिखिए)

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न 4 वाक्य बनाइए ।

क) ढेर ....

....

ख) रौंदना ....

....

ग) चकित ....

....

घ) क्षण ....

....

ङ) चमत्कार ....

....

गिनती

1. एक	11. ग्यारह	21. इक्कीस	31. एकतीस	41. इकतालीस
2. दो	12. बारह	22. बाईस	32. बत्तीस	42. बयालीस
3. तीन	13. तेरह	23. तेईस	33. तैंतीस	43. तैंतालीस
4. चार	14. चौदह	24. चौबीस	34. चौंतीस	44. चवालीस
5. पाँच	15. पंद्रह	25. पच्चीस	35. पैंतीस	45. पैंतालीस
6. छह	16. सोलह	26. छब्बीस	36. छत्तीस	46. छियालीस
7. सात	17. सत्रह	27. सत्ताईस	37. सैंतीस	47. सैंतालीस
8. आठ	18. अठारह	28. अट्ठाईस	38. अड़तीस	48. अड़तालीस
9. नौ	19. उन्नीस	29. उनतीस	39. उनतालीस	49. उनचास
10. दस	20. बीस	30. तीस	40. चालीस	50. पचास

प्रश्न 1. गिनती पूरी कीजिए–

1 .... 6 7 ....

21 .... 23 .... 25 .... 29 ....

प्रश्न 2 हिंदी के अंकों में अपना फोन नंबर लिखिए–

....

प्रश्न 3 अंग्रेज़ी अंकों को हिंदी के अंकों में लिखिए–

28 ....

36 ....

16 ....

10 ....

18 ....

46 ....

14 ....

22 ....

19 ....

32 ....

45 ....

4. गिनती पूरी करें–

अंग्रेज़ी अंको में	हिंदी शब्दों में
1	....
6	....
33	....
39	....
5	....
26	....
32	....
36	....
9	....
48	....
11	....
29	....
13	....
17	....
15	....

संज्ञा

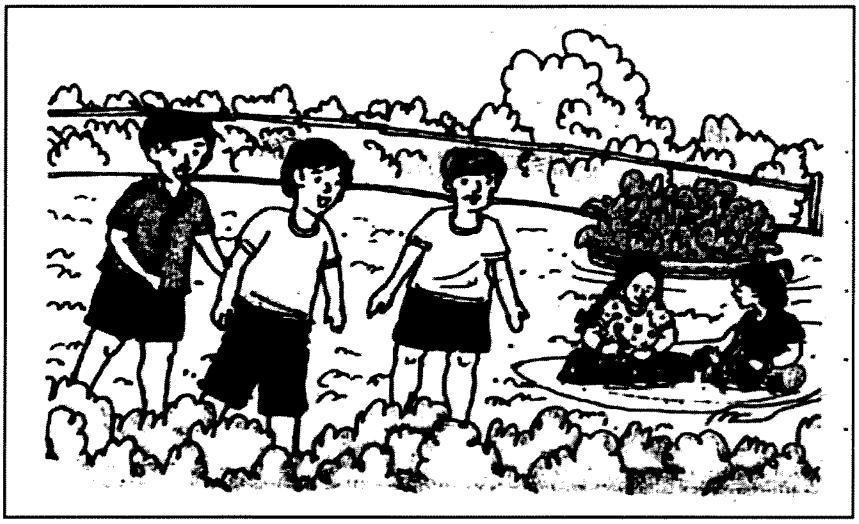

हमारे आस–पास जो कुछ भी दिखाई देता है– लोग, वस्तुएँ, पशु–पक्षी, स्थान, गाँव, शहर– सभी के नाम होते हैं।
जैसे – शालिनी और उसकी बहन गुड़िया के साथ खेल रही हैं। मयंक को बाग में घूमना अच्छा लगता है। वहाँ अपने मित्रों से मिलकर उसे खुशी मिलती है।

ऊपर के वाक्यों में व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव – सभी के नाम दिए गए हैं। जैसे–

व्यक्ति	वस्तु	स्थान	भाव
मयंक, शालिनी, बहन, मित्रों	गुड़िया	बाग	खुशी

ये सभी संज्ञा शब्द हैं।

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
संज्ञा के भेद –

संज्ञा

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
मोहिनी, गंगा	बच्चा, लड़की	गरमी, हँसी
हिमालय, कानपुर	नदी, पहाड़, दिन	खुशी, अच्छाई
जनवरी, बुधवार	महीना, पशु, फल	बहादुरी, वीरता

1. दिए गए शब्दों में से जातिवाचक, व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक संज्ञा शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखें–

बच्चे, छात्रा
मोर, बचपन, रमा
फल, खुशी, शिक्षिका
सच्चाई, रूस, अमरीका, पर्वत
मेहनत, लिखावट
यमुना, डल झील, सोमवार,
चढ़ाई

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

2. कोष्ठक में लिखे शब्दों को भाववाचक संज्ञा में बदलकर खाली जगह में लिखें–

क) विनय की .... से सब प्रभावित हुए। (सज्जन)

ख) चिंटू .... में बहुत नटखट था। (बच्चा)

ग) कौए को .... लगी थी। (प्यासा)

घ) मुझे .... लग रही है। (गरम)

ङ) सैनिक .... से लड़े और जीत गए। (वीर)

च) परिश्रम करने से .... अवश्य मिलती है। (सफल)

छ) इस पेड़ की .... बहुत अधिक है। (ऊँचा)

ज) हर व्यक्ति में .... होती है तो .... भी। (बुरा, अच्छा)

3. आइए, संज्ञा-सीढ़ी का खेल खेलें। कविता के अंतिम वर्ण से संज्ञा शब्द बनाइए।

अक्कड़–बक्कड़ बंबे बो
अस्सी–नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा।
चोर निकलकर भागा।

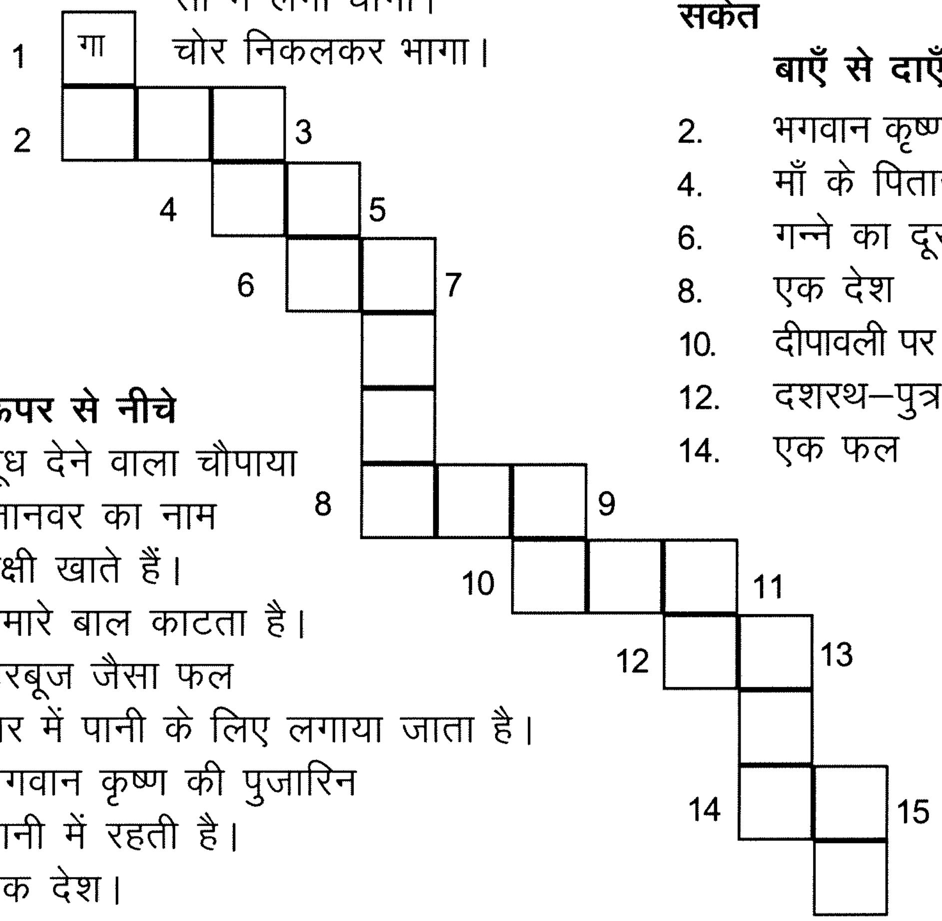

संकेत

बाएँ से दाएँ

2. भगवान कृष्ण की माँ का नाम।
4. माँ के पिताजी।
6. गन्ने का दूसरा नाम
8. एक देश
10. दीपावली पर पूजा की जाती है।
12. दशरथ–पुत्र
14. एक फल

संकेत

ऊपर से नीचे

1. दूध देने वाला चौपाया जानवर का नाम
3. पक्षी खाते हैं।
5. हमारे बाल काटता है।
7. तरबूज जैसा फल
9. घर में पानी के लिए लगाया जाता है।
11. भगवान कृष्ण की पुजारिन
13. पानी में रहती है।
15. एक देश।

4. निम्नलिखित वाक्यों से संज्ञा शब्द ढूँढ़कर लिखें।

क) कंस मथुरा का राजा था। ....

ख) गंगा हिमालय से निकलती है। ....

ग) आम फलों का राजा है। ....

घ) मोर सुंदर पक्षी है। ....

ङ) कर्ण बहुत दानी था। ....

पत्र-लेखन
(अनौपचारिक)

मित्र के जन्मदिन पर उसे बधाई देते हुए पत्र

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
6 अगस्त, 2017

प्रिय मित्र हर्ष

सादर नमस्कार

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है वहाँ भी सब कुशल होंगे। दस अगस्त को तुम्हारा जन्मदिन है। उसके लिए मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य तुम्हें बहुत–बहुत शुभकामनाएँ देते हैं। ईश्वर करे तुम अपने जीवन में हमेशा सफलता प्राप्त करते रहो।

अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना तथा मिनी को प्यार देना।

पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में

तुम्हारा मित्र
रमन

अपने मित्र को पत्र लिखकर उसे अपने साथ छुट्टियाँ बिताने के लिए आमंत्रित करिए–

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक ....

प्रिय ....

सादर नमस्कार

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा..

....

....

....

....

....

....

....

....

अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र/तुम्हारी सखी

....

अगस्त/सितंबर

बरगद का वृक्ष (पठित गद्यांश)

बरगद के फूल और फलों को देख, अपनी तरक्की को याद कर गड़रिया तिरस्कार की हँसी हँसा। उसके पास पहले एक ही बकरी होती थी पर धीरे–धीरे उसने अपनी होशियारी से अपने झुंड को काफ़ी बड़ा कर लिया था। वह अपने आपको कुछ समझने लगा था। वह घमंड से बोला– वाह रे विशाल पेड़! बस खुद ही बड़े हुए, अपने फूलों और फलों को तो देखो! अपनी लटकती दाढ़ी को तो देखो! हा–हा–हा! हा–हा–हा!

बरगद ने सब सुना परंतु बोला कुछ नहीं। तभी हवा चलने लगी। पत्तों से सर्र–सर्र की हलकी ध्वनि निकली जैसे वे कोई लोरी गा रहे हों। लड़के की शीघ्र ही आँख लग गई। तभी एक–दो फल उसके मुँह पर आ गिरे। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने ऊपर देखा। उसे किसी के हँसने की आवाज़ सुनाई दी। थोड़ा क्रोध आया–एक तो मेरी नींद खराब कर दी, ऊपर से हँस रहा है।

प्रश्न 1 गद्यांश पढ़कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

क) गड़रिए को किस बात का घमंड था और उसने वृक्ष से क्या कहा?

....

....

ख) गड़रिए को क्रोध क्यों आया?

....

....

ग) गड़रिया हड़बड़ाकर क्यों उठ बैठा?

....

....

प्रश्न 2 गद्यांश में ढूँढ़कर पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

क) प्रगति ....

ख) अनादर ....

ग) घबराकर ....

घ) गुस्सा ....

ङ) जल्दी ....

च) अपमान ....

छ) लेकिन ....

ज) आवाज़ ....

प्रश्न 3 वाक्य बनाइए ।

(i) शीतल ....

....

(ii) लोरी ....

....

(iii) पस्त ....

....

(iv) विशाल ....

....

(v) तिरस्कार ....

....

प्रश्न 4 पेड़ के बारे में एक 'स्लोगन' लिखिए। (चित्र भी बनाइए)

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

हम भी वापस जाएँगे (पठित पद्यांश)

पत्ते, शाखें और गिलहरी
मिट्टी की यह सौंधी खुशबू
छोड़ जाऊँगी अपने पीछे
क्यों न इस ऊँचे पर्वत को
अपने साथ उड़ा ले जाऊँ,
और चोंच में मिट्टी भरकर
अपने छोटे पंख फैलाकर
थोड़ी दूर उड़ी फिर वापस
आ टीले पर बैठ गई वह।

हम भी उड़ने की चाहत में
कितना कुछ तज आए हैं
यादों की मिट्टी से आखिर
कब तक दिल बहलाएँगे!
वह दिन आएगा जब वापस
फिर पर्वत को जाएँगे
आबादी से दूर, घने सन्नाटे में
हम भी वापस जाएँगे।

प्रश्न 1. पद्यांश के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

क) काव्यांश के कवि का नाम बताइए।

....

....

ख) गौरैया को क्या–क्या छोड़कर जाने का दुख है?

....

....

ग) गौरैया ने किसे अपने साथ उड़ा लेने की सोची?

....

....

प्रश्न 2 काव्यांश में से ढूँढ़कर एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए :–

1. पहाड़ .... 2. इच्छा ....

3. सुगंध .... 4. भीनी–भीनी ....

प्रश्न 3 वाक्य बनाइए :

(i) आबादी ....

....

(ii) सुनहरी ....

....

(iii) संगी–साथी ....

....

(iv) सन्नाटा ....

....

(v) टीले ....

....

प्रश्न 4 किसी एक पक्षी का चित्र बनाकर या चिपकाकर उसके बारे में पाँच-छः पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

लिंग

शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के दो भेद हैं-

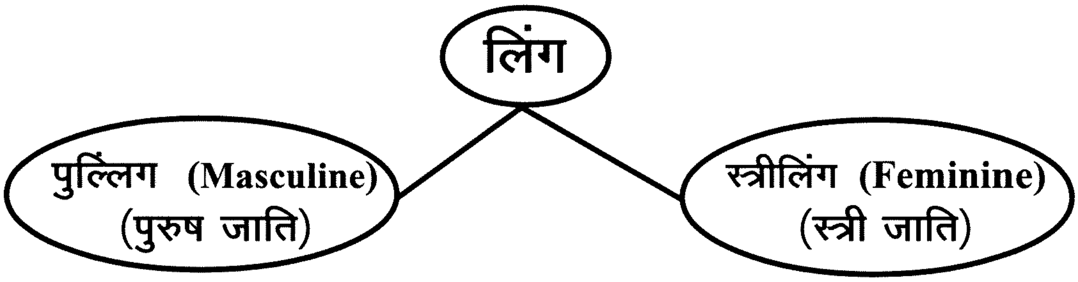

जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो, वे **पुल्लिंग** कहलाते हैं।

जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो, वे **स्त्रीलिंग** कहलाते हैं।

अभ्यास

कोष्ठक से उचित शब्दों को छाँटकर लिखिए-

(क) प्रदीप अच्छा .... है। (लड़का, लड़की)

(ख) अमित प्रतिदिन पाठशाला .... है। (जाता, जाती)

(ग) रेलगाड़ी दिल्ली पहुँच .... है। (गई, गया)

(घ) सुमित्रा खाना बना .... है। (रहा, रही)

2. नीचे लिखे शब्दों के लिंग बदलिए-

बूढ़ा	....	मालिन	....	अध्यापक	....
धोबी	....	चुहिया	....	गाय	....
चींटी	....	नौकरानी	....	शेर	....
मालकिन	....	बेटी	....	ऊँटनी	....
छात्र	....	भाई	....	हाथी	....

3. लिंग बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।

(क) गाय घास चर रही है।

....

(ख) चिड़िया उड़ रही है।

....

(ग) वह अच्छा अभिनेता है।

....

(घ) मगध का सम्राट वीर था।

....

(ङ) मेरे पिता बहुत बड़े विद्वान हैं।

....

वचन

संज्ञा या सर्वनाम शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चले, उसे वचन कहते हैं।

वचन के दो भेद होते हैं

1. एकवचन 2. बहुवचन

1. **एकवचन** – संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चले, उसे एक वचन कहते हैं। जैसे– किताब, नदी, पत्ता, दरवाज़ा आदि।

2. **बहुवचन** – संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे – किताबें, नदियाँ, पत्ते, दरवाज़े आदि।

जिनके बारे में हम आदर से बात करते हैं, उनके लिए एकवचन संज्ञा होने पर भी क्रिया का बहुवचन रूप प्रयोग किया जाता है।

जैसे – पिताजी आ रहे हैं।, माताजी खाना बना रही हैं।

शिक्षक पढ़ा रहे हैं। आदि।

अभ्यास

1. **वचन बदलिए।**

'ई' को 'इयाँ' में बदलकर		**'आ' में 'एँ' जोड़कर**	
(क) नदी –	....	(क) माला –	....
(ख) लड़की –	....	(ख) सभा –	....
(ग) मिठाई –	....	(ग) महिला –	....
(घ) दवाई –	....	(घ) अध्यापिका –	....
(ङ) बिल्ली –	....	(ङ) शिक्षिका –	....
(च) रानी –	....	(च) कक्षा –	....

'आ' को 'ए' में बदलकर

(क) कपड़ा– ....

(ख) गुब्बारा – ....

(ग) घोड़ा – ....

(घ) पौधा – ....

(ङ) बेटा – ....

ए में ' ॅ ' जोड़कर

(क) किताब – ....

(ख) मशीन – ....

(ग) बात – ....

(घ) सड़क –..............................

(ङ) रात – ....

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए–

(क) माली ने .... लगाए। (पौधा/पौधे)

(ख) .... खेल रहे हैं। (लड़का/लड़के)

(ग) मेरे पास कुछ .... हैं। (रुपया/रुपए)

(घ) .... खेल रहे हैं। (वह/वे)

(ङ) .... पढ़ रहा हूँ। (मैं/हम)

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण के चार भेद हैं

1. गुणवाचक विशेषण – संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग–रूप आदि बताते हैं।

   जैसे – छोटा, सुंदर, वीर, अच्छा आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण – संज्ञा या सर्वनाम की संख्या या गिनती बताते हैं।

   जैसे – चार, पहली, आखिरी, कई, कुछ आदि।

3. परिमाणवाचक विशेषण – संज्ञा या सर्वनाम का माप–तौल बताते हैं।

   जैसे – एक किलो, चार मीटर, थोड़ा, दो किलोमीटर आदि।

4. सार्वनामिक विशेषण – जब सर्वनाम शब्द को संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने के लिए प्रयोग किया जाता है। जैसे – वह फूल, यह कमरा आदि।

1. **सुमित का पेंसिल बॉक्स कहीं खो गया। उसने नोटिस-बोर्ड पर इसकी सूचना लिखकर लगा दी।**

सूचना

दिनांक 13.04.2017

मित्रों,

कल मेरा नीले रंग का, बड़ा, दो खानों वाला, विदेशी पेंसिल बॉक्स खो गया है। उसमें तीन, लाल, बड़ी पेंसिलें, काले रंग का एक नया गोल कटर और दो लंबे, सफ़ेद रबर हैं। यदि आपको ऐसा पेंसिल बॉक्स मिले तो कृपया चौथी कक्षा की हिंदी अध्यापिका को दे दें।

सुमित
चौथी 'ए'

सुमित का पेंसिल बॉक्स कैसा था?

....

उसमें रखी पेंसिलें, कटर और रबर कैसे थे?

पेंसिलें: ....

कटर: ....

रबर : ....

2. विशेषण और विशेष्य के जोड़े रेखा खींचकर मिलाएँ-

	विशेषण	विशेष्य
1.	नरम	बादल
2.	रंगीन	पर्वत
3.	काले	गद्दा
4.	ऊँचे	पेंसिलें
5.	विशाल	झील
6.	स्वच्छ	हृदय
7.	दयालु	भवन

3. प्रत्येक विशेष्य के साथ दो-दो विशेषण लिखिए-

....	....	इमारत
....	....	विद्यालय
....	....	कहानी
....	....	पुस्तक
....	....	कन्या
....	....	आकाश

4. रिक्त स्थानों में उचित विशेषण भरिए।

(क) बाघ भारत का .... पशु है।

(ख) जेब में .... पैसे थे।

(ग) धरती .... है।

(घ) यह मेरा .... जन्मदिन है।

(ङ) .... लड़कों को बुलाओ।

(च) वह लड़का .... है।

(छ) .... दूध दो।

5. दिए गए विशेषणों को उचित विशेष्य से मिलाइए।

हरे–भरे   बहादुर   पुराना   सुंदर   सुनहरी   थोड़ा

(क) .... मंदिर   (ख) .... कपड़े

(ग) .... चिड़िया   (घ) .... लड़का

(ङ) .... खेत   (च) .... पानी

6. रेखांकित विशेषण शब्दों के भेद लिखिए।

(क) सारे जहाँ से <u>अच्छा</u> हिंदोस्तां हमारा। ....

(ख) <u>उन</u> लड़कों को बुलाओ। ....

(ग) माँ <u>दो किलो</u> आम लाई। ....

(घ) श्याम <u>ताज़े</u> फल लाया है। ....

(ङ) जाओ, <u>दूसरी</u> कमीज़ पहनो। ....

(च) कितना <u>सुहावना</u> मौसम है। ....

(छ) <u>थोड़ा</u> पानी मिलेगा। ....

(ज) <u>इस</u> डिब्बे में क्या है? ....

7. नीचे लिखे वाक्यों में से विशेषण तथा विशेष्य छाँटकर लिखिए।

	विशेषण	विशेष्य
(क) आसमान में काले बादल छा रहे हैं।	....	....
(ख) कुछ लोग सड़क पार कर रहे हैं।	....	....
(ग) दूसरों की बुराई करना बुरी आदत है।	....	....
(घ) ये बहुत स्वादिष्ट गुलाब जामुन हैं।	....	....

8. नीचे लिखे संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाइए-

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
साहस	....	धन	....
चालाकी	....	सुंदरता	....
दुख	....	राष्ट्र	....
नमक	....	शरारत	....

सारस और लोमड़ी
(अपठित गद्यांश)

"किसी जंगल में एक सारस और एक लोमड़ी रहते थे। इन दोनों में गहरी मित्रता थी। एक दिन लोमड़ी को मज़ाक सूझा। उसने सारस से कहा, "सारस भैया! कल मेरा जन्मदिन है। कल मेरे घर भोजन करने आना।" सारस ने प्रसन्नतापूर्वक उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

अगले दिन सारस लोमड़ी के घर गया। लोमड़ी ने एक थाली में खीर परोसी और बोली, "सारस भैया लो खीर खाओ।" सारस अपनी लंबी चोंच से खीर न खा सका। वह एक–एक दाना उठा–उठाकर खाने लगा। उधर लोमड़ी थोड़ी ही देर में सारी खीर चट कर गई। सारस भूखा ही रह गया। पर वह लोमड़ी की चालाकी समझ गया। उसने मन ही मन लोमड़ी से बदला लेने की ठानी।

कुछ दिन बीत गए। एक दिन सारस ने लोमड़ी से कहा, "लोमड़ी बहन! कल मेरा जन्मदिन है। तुम मेरे घर भोजन करने ज़रूर आना।" लोमड़ी ने भी सारस का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अगले दिन सारस ने भी खीर बना रखी थी। उसने एक लंबी गरदन वाली सुराही में खीर परोसी और बोला, "बहन! खीर खाओ।" सुराही का मुँह पतला था इसलिए लोमड़ी खीर नहीं खा सकी और सारस लंबी चोंच से सारी खीर चट कर गया।

अभ्यास

(क) लोमड़ी ने मज़ाक करने के लिए सारस से क्या कहा?

....

....

....

(ख) सारस खीर क्यों नहीं खा सका?

....

....

....

....

(ग) सारस ने अपने मन में क्या ठाना?

....

....

....

....

(घ) लोमड़ी खीर क्यों नहीं खा सकी?

....

....

....

....

अक्तूबर

ऐसे थे बापू (पठित गद्यांश)

"उदय! जल्दी–जल्दी गृह–कार्य समाप्त कर लो, माँ ने कहा। " माँ कल स्कूल की छुट्टी है, "गृह–कार्य कल कर लूँगा।" उदय ने चहकते हुए कहा। "छुट्टी क्यों है? माँ ने जिज्ञासा से पूछा। उदय ने जवाब दिया 'कल दो अक्तूबर है, गांधी जी का जन्मदिन। गांधी जयंती पर विद्यालय में छुट्टी होती है"।

गांधी जी हमारे बापू थे। बापू बच्चों से बहुत प्यार करते थे। बाबू जी से मिलने बहुत से बच्चे आया करते थे। एक दिन एक छोटे–से बालक ने बापू की वेश–भूषा देखी तो उसे बड़ा दुख हुआ।

प्रश्न 1 गद्यांश पढ़कर उत्तर दीजिए -

क) हमारे देश के बापू कौन हैं?

उत्तर ....

....

ख) बच्चे उनसे मिलने क्यों जाते थे?

उत्तर ....

....

ग) छोटा बच्चा बापू को देखकर क्यों दुखी हुआ?

उत्तर ....

....

प्रश्न 2 गद्यांश से ढूँढ़कर पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

(क) माता .... (ख) दिवस ....

(ग) प्रेम .... (घ) पाठशाला ....

(ङ) उत्तर .... (च) अवकाश ....

प्रश्न 3 गद्यांश में से ढूँढ़कर विलोम शब्द लिखिए :-

(क) नफ़रत .... (ख) सुख ....

(ग) शुरू .... (घ) कक्षा–कार्य ....

प्रश्न 4 दिए गए शब्दो के लिंग बदल कर लिखिए:-

(क) पिता .... (ख) बच्ची ....

(ग) बालिका ....

प्रश्न 5 सही स्थान पर संज्ञा शब्द लिखिए।

गाँधी जी, दुख, प्यार, बच्चा, बालक, स्कूल, माँ, उदय

(क) व्यक्तिवाचक .... (ख) भाववाचक ....

(ग) जातिवाचक ....

प्रश्न 6 शब्दों के अर्थ लिखिए।

(क) वेश–भूषा ....

(ख) गृह कार्य ....

(ग) चहकते ....

प्रश्न 7 वाक्य बनाइए।

(i) गृह–कार्य ....

....

(ii) जिज्ञासा ....

....

(iii) जन्मदिन ....

....

(iv) जल्दी–जल्दी ....

....

प्रश्न 8 महात्मा गाँधी के बारे में आपने पढ़ा और सुना होगा। आपके विचार से गांधी जी कैसे व्यक्ति थे? (6–8 पंक्तियों में लिखिए)।

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

विराम चिह्न

लिखते समय अपनी बात को सही-सही समझाने के लिए हम जिन चिह्नों का विराम के रूप में प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम - चिह्न कहते हैं।

विराम चिह्न के प्रकार

पूर्णविराम (।)

अल्पविराम (,)

प्रश्नचिह्न (?)

अर्धविराम (;)

विस्मय चिह्न (!)

उद्धरण चिह्न (“ ”)

1. **नीचे लिखे वाक्यों में सही विराम-चिह्न चुनकर लगाइए।**

(क) बच्चे दौड़ते हैं

(ख) तुम कहाँ जा रहे हो

(ग) वाह क्या खुशबू है

(घ) चमन नमन सुमन और शीला साथ–साथ पढ़ते हैं

(ङ) गाँधी जी कहते थे सदा सत्य बोलो

2. नीचे लिखे वाक्यों में विराम चिह्न लगाइए–

1. मैं घर जा रहा हूँ
2. राम राघव और दिनेश मेरे मित्र हैं
3. यह मेरी किताब है
4. ओह मैं तो भूल ही गई कि मुझे तुम्हारे घर आना था
5. वाह तुमने तो कमाल कर दिया
6. क्या तुम घर जा रहे हो
7. मेरे पास पेन रबड़ और कुछ रंगबिरंगी पेंसिलें भी हैं
8. तुम्हारे पास कितने पैसे हैं
9. तुम कल कहाँ जा रहे थे
10. तुमने यह पेन कितने रुपए में खरीदा
11. वाह कितना खूबसूरत पक्षी है
12. लालकिला दिल्ली में है
13. आह मज़ा आ गया
14. रीना इधर आओ
15. अरे ये क्या कर डाला
16. माँ ने आलू प्याज़ मूली और बैंगन खरीदे
17. भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं
18. दिल्ली मुंबई और चेन्नई बड़े शहर हैं

सर्वनाम

सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

सर्वनाम के चार भेद हैं

1 **पुरुषवाचक सर्वनाम**

2 **निश्चयवाचक सर्वनाम**

3 **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**

4 **प्रश्नवाचक सर्वनाम**

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम जो बोलने वाले, सुनने वाले तथा किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

अभ्यास

उपयुक्त पुरुषवाचक सर्वनाम लिखकर वाक्य पूरे करिए:

(क) .... विद्यालय चला गया।

(ख) .... अध्यापिका ने बुलाया है।

(ग) .... खाना खा रहा हूँ।

(घ) .... लोग यहाँ क्या कर रहे हैं?

(ङ) .... अवश्य जीतेंगे।

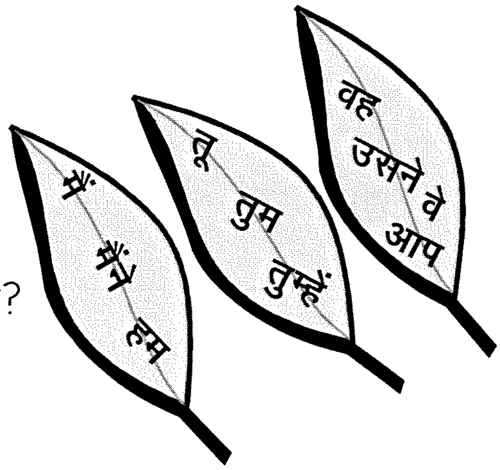

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

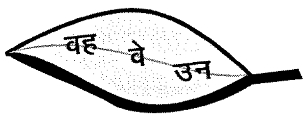

अभ्यास

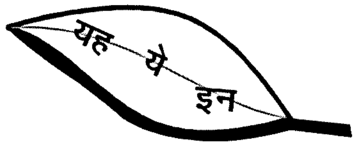

उपयुक्त निश्चयवाचक सर्वनाम लिखकर वाक्य पूरे करिए:

(क) .... आमों को देखो, ... बहुत पीले हैं।

(ख) .... रास्ता मुझे मालूम नहीं।

(ग) .... लोग लड़ाकू हैं।

(ङ) .... रोहित का घर है।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न कराएँ, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

अभ्यास

उपयुक्त अनिश्चयवाचक सर्वनाम लिखकर वाक्य पूरे करिए:

(क) दूध में .... गिर गया है।

(ख) अपनी कक्षा से .... को बुला लाओ।

(ग) आपको .... बुला रहा है।

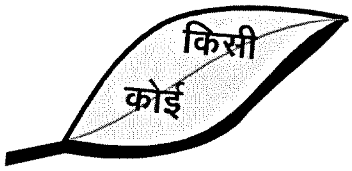

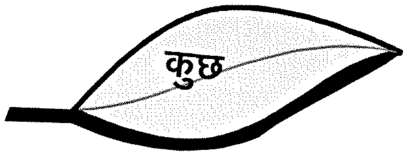

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति या वस्तु से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अभ्यास

उपयुक्त प्रश्नवाचक सर्वनाम लिखकर वाक्य पूरे करिए:

(क) .... शर्मा जी की पत्नी आ गई हैं?

(ख) यह .... स्वेटर है?

(ग) .... रमण विद्यालय नहीं पहुँचा?

(घ) आज फिर .... आया था?

(ङ) तुम विदेश से .... लाए हो?

क) नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित सर्वनामों के भेद बताइए।

1. मैंने पत्र लिखा। ....

2. यह मेरी घड़ी है। ....

3. राम से कोई मिलने आया है। ....

4. कुरसी पर कौन बैठा है? ....

5. बाहर से किसी को बुला लाओ। ....

ख) सही सर्वनाम शब्द लगाकर वाक्य फिर से लिखिए

1. मेरे को खाना चाहिए।

----

2. तुमसे कुछ मिलने आया है।

----

3. मैं मेरा काम कर रहा हूँ।

----

4. तेरे को क्या चाहिए?

----

5. आप क्या खा रहे हो?

----

6. तुम तुम्हारे घर जाओ।

कहानी लेखन

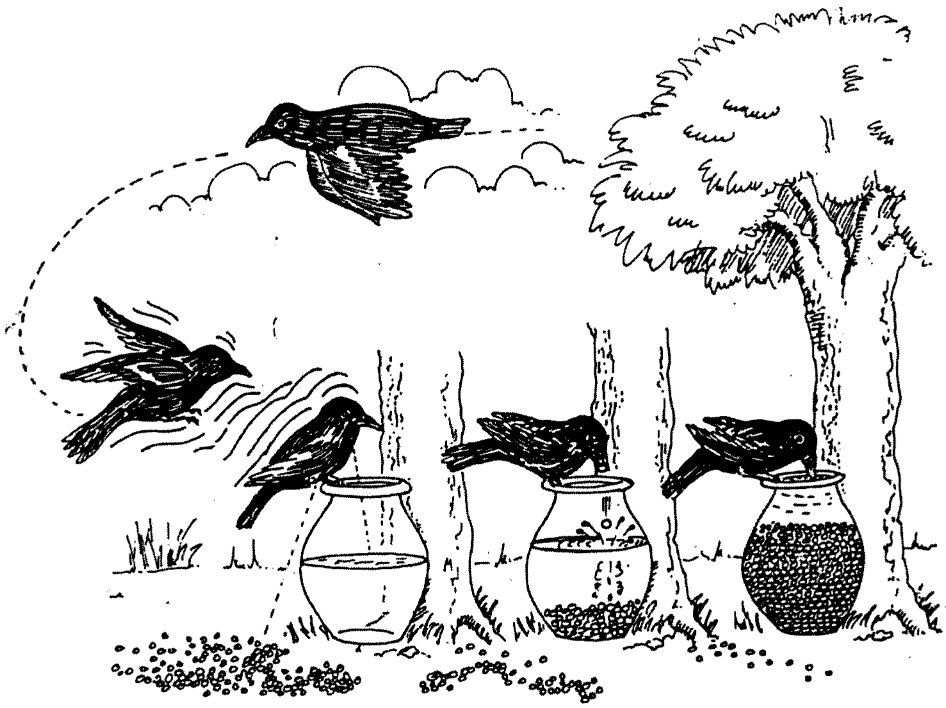

शीर्षक ____________________

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

भेड़िया आया, भेड़िया आया! (अपठित गद्यांश)

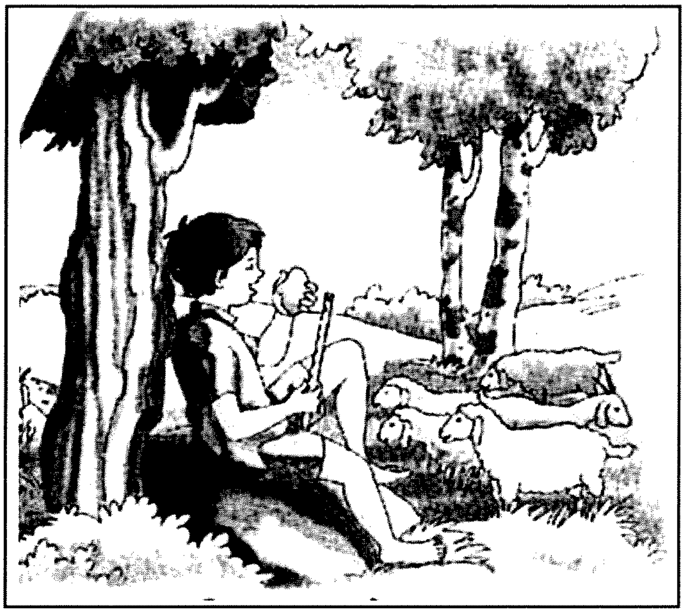

भोलू भेड़–बकरियाँ चराता था। वह सुबह–सुबह भेड़–बकरियों के साथ जंगल चला जाता। भेड़ें और बकरियाँ दिनभर वहाँ चरतीं।

भोलू पेड़ के नीचे बैठ आराम करता। कभी जंगली फल खाता। कभी अपनी बाँसुरी बजाता।

एक दिन उसे शरारत सूझी। वह चिल्लाया – भेड़िया आया, भेड़िया आया! बचाओ।

दूर खेतों में काम करते लोगों ने सुना। वे लाठियाँ लेकर भागे आए। उन्हें देख भोलू हँसने लगा। बोला – भेड़िया भाग गया।

दो–चार रोज़ बाद फिर चिल्लाया – भेड़िया, भेड़िया! मुझे बचाओ! लोग फिर लाठियाँ लेकर भागे आए। भोलू फिर हँसने लगा। लोग बहुत नाराज़ हुए।

कुछ दिन बाद सचमुच भेड़िया आ गया। भोलू घबराकर चिल्लाया – भेड़िया, भेड़िया! बचाओ पर कोई उधर नहीं आया।

भोलू किसी तरह पेड़ पर चढ़ गया। पर भेड़िए ने एक भेड़ को मार दिया। और एक बकरी को मुँह में दबाकर जंगल में दूर चला गया।

अभ्यास

1. उत्तर लिखिए।

(क) जब भेड़-बकरियाँ जंगल में चरती थीं, उस समय भोलू क्या-क्या करता था?

....

....

....

(ख) भोलू क्या चिल्लाया?

....

....

....

(ग) भोलू ने किस तरह अपनी जान बचाई?

....

....

....

(घ) इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

....

....

....

....

....

....

....

....

नवंबर

सफल खिलाड़ी (पठित गद्यांश)

कई वर्षों के बाद नंदनवन में खेल–कूद की विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन की घोषणा हुई। सभी जानवर बहुत खुश थे। सभी को अपनी प्रतिभा दिखलाने का अवसर मिलेगा। खेलों के आयोजन का भार हिरन को सौंपा गया था।

हिरन सोचने लगा – खेल–प्रतियोगिताओं का मूल उद्देश्य आपस में सद्भावना और एकता पैदा करना होता है। वह खेलों का आरंभ कैसे करे कि सभी खिलाड़ी जानवर खेलों की इस मूल भावना को समझ जाएँ! अचानक उसके मन में एक विचार आया जिसे सोचकर वह मुसकरा दिया।

प्रश्न–1 गद्यांश पढ़कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

क) खेल प्रतियोगिता का आयोजन कहाँ किया गया?

....

....

ख) खेल प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

....

....

ग) सभी जानवर खुश क्यों थे?

....

....

प्रश्न–2 गद्यांश में से चुनकर पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

शुरू .... प्रबंध ....

भिन्न–भिन्न .... मुख्य ....

प्रश्न–3 वाक्य बनाइए ।

(i) परिचय ....

....

(ii) वर्ष ....

....

(iii) पूर्वानुमान ....

....

(iv) उदाहरण ....

....

प्रश्न–4 अपने प्रिय खिलाड़ी का चित्र चिपकाकर उसके बारे में 4 – 8 पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

डरना कभी न जाना (पठित काव्यांश)

हमने डरना कभी न जाना, आँधी से, तूफ़ान से
देखो, हम बढ़ते जाते हैं, कैसे अपनी शान से

काँटे आते, उन्हें हटाते, तुरंत बनाते राह
बड़े–बड़े रोड़ों की भी, करते न कभी परवाह

सिर अपना ऊँचा रखते हैं, हरदम हम अभिमान से
हमने डरना कभी न जाना, आँधी से, तूफ़ान से।

दिन में राह बताता सूरज, फिर जब आती रात
चाँद चाँदनी बिखराता है, करता हमसे बात

हम एसे बढ़ते जाते हैं, राह देखते ध्यान से
हमने डरना कभी न जाना, आँधी से, तूफ़ान से

मंज़िल पर ही रुकना हमको, हो कितनी भी दूर
लंबी राह नहीं कर सकती, हमें कभी मजबूर

हमको अपनी मंज़िल प्यारी, ज़्यादा अपनी जान से
हमने डरना कभी न जाना, आँधी से, तूफ़ान से।

प्रश्न–1 काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क) कविता के कवि का नाम लिखिए।

....

....

ख) इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

....

....

ग) कविता में कौन–कौन सी चीज़ें कवि की राह नहीं रोक सकती हैं?

....

....

घ) दिन और रात में राह कौन बतलाता है?

....

....

प्रश्न–2 काव्यांश में से ढूँढ़कर पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

रवि .... गर्व ....

शशि .... रास्ता ....

प्रश्न–3 दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(i) मंज़िल ....

....

(ii) परवाह ....

....

(iii) बिखराता ....

....

(iv) शान ....

....

(v) मजबूर ....

....

प्रश्न–4 दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए।

(क) हरदम ....

(ख) परवाह ....

(ग) शान ....

प्रश्न–5 क्या कभी आपको किसी से डर लगा है? आपने उस डर का सामना कैसे किया, 6 – 7 पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

मेरा प्रिय त्योहार (अनुच्छेद लेखन)

दिसंबर

चतुर चरवाहा (पठित गद्यांश)

एक दिन की बात है, मनुवा नाम का लड़का भेड़ चराते–चराते खुशी से उछल पड़ा। साथ ही चिल्लाकर बोला– ''मैंने पहेली बूझ ली''। उसकी बात एक अज्ञात घुड़सवार ने सुनी और चिल्लाकर बोला ''क्या तुम बिना शोर मचाए चुपचाप भेड़ें नहीं चरा सकते? देखो तुम्हारी फर की टोपी के कारण मेरा घोड़ा डर गया।''

''मैंने जान बूझकर उसे नहीं डराया'', मनुवा बोला मैं तो बहुत खुश था। अच्छा! तो तुम किस बात से इतने खुश थे? घुड़सवार ने फिर पूछा। ''मैंने पहेली बूझ ली''। मनुवा ने जवाब दिया।

प्रश्न–1 गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क) यह गद्यांश किस देश की लोक कथा से लिया गया है?

....

....

ख) मनुवा कौन था और वह क्या करता था?

....

....

ग) घुड़सवार क्यों गुस्सा हो गया?

....

....

घ) घोड़ा किस चीज़ से डर गया?

....

....

प्रश्न–2 गद्यांश में से छाँटकर पाँच क्रिया शब्द लिखिए :–

क) .... घ) ....

ख) .... ङ) ....

ग) ....

प्रश्न–3 दिए गए शब्दों के विलोम गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए :-

(क) बिना जाने .... (घ) ज्ञात ....

(ख) दुख .... (ङ) शांति से ....

(ग) अनेक ....

प्रश्न–4 दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द गद्यांश से छाँटकर लिखिए :-

(क) वजह .... (ग) हर्ष ....

(ख) शांत .... (घ) भय ....

प्रश्न–5 दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(i) जान–बूझकर ....

....

(ii) शोर ....

....

(iii) चुपचाप ....

....

(iv) कारण ....

....

प्रश्न–6 जब आप बहुत खुश होते हैं तब अपनी खुशी दूसरों को बताने के लिए क्या - क्या करते हैं? 5 – 6 पंक्तियों में लिखिए।

उत्तर ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

हमारी नाव चली (पठित काव्यांश)

आओ भैया तुम्हें सुनाएँ, सुंदर एक कहानी
मगर नहीं राजा–रानी की, पर है बहुत पुरानी।

छोटी–छोटी नावें देखो, हमको सैर करातीं
पानी पर अठखेली करतीं, सभी ओर ले जातीं।

कुछ पुरखे थे बसे हमारे, नदियों के ही तीर
कंद, मूल, फल खाकर जीते, पीते निर्मल नीर।

सोचो तो जब नाव नहीं थी, तब हम क्या कर सकते?
लंबी–लंबी, गहरी नदियाँ कैसे पार उतरते?

लड़के खेला करते थे नित, बैठ नदी किनारे
तैर कभी कुछ पार उतरते, कुछ रहते मन मारे।

एक खिलाड़ी लड़का आया, लिए पेड़ की टहनी
ज़ोर लगा पानी में फेंकी, रही तैरती टहनी।

हुआ अचंभा सबको बेहद, टहनी ज़रा न डूबी
इधर–इधर मँडराती जाती, यह थी उसकी खूबी।

लड़के सब हो गए इकट्ठे, करने की खिलवाड़
लगे फेंकने लंबी शाखें, पीपल हो या ताड़।

वे सब के सब रहे तैरते, बड़े मौज से बहते
लड़के उनको देख खुशी से, आपे में क्या रहते!

पानी पर क्या तैर सकेगी मोटी लकड़ी भारी
बड़े पेड़ का तना काटने की तब हुई तैयारी।

रहा तैरता बड़ी शान से, बड़े पेड़ का लट्ठा
उसके बाद गया तैराया, बड़े तने का गट्ठा।

बनने लगीं तभी से नावें, छोटी, बड़ी हमारी
पानी से क्यों कर डर लगता, विजय हुई थी भारी।

सागर हमने जीत लिया है, छूट गया डर सारा।
चले चीरता उसकी छाती, बड़ा जहाज़ हमारा।

अगर नहीं वह छोटा लड़का, टहनी को तैराता।
बनती कैसे ये नौकाएँ, क्या जहाज़ बन पाता?

प्रश्न–1 काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क) हमारे कुछ पूर्वज कहाँ रहते थे और क्या खाते थे?

....

....

ख) लड़के नदी के किनारे क्या करते थे?

....

....

ग) कविता में लड़कों ने अपने डर पर कैसे विजय प्राप्त की?

....

....

प्रश्न–2 दिए गए शब्दों के वचन बदलिए:–

(क) नाव ....

(ख) पेड़ ....

(ग) टहनी ....

(घ) नौका ....

(ङ) खिलाड़ी ....

(च) नदी ....

प्रश्न–3 काव्यांश में से पाँच विशेषण शब्द छाँट कर लिखिए :-

क) .... घ) ....

ख) .... ङ) ....

ग) ....

प्रश्न–4 काव्यांश में से छाँटकर दिए गए शब्दों के विलोम लिखिए :–

(क) पराजय ....

(ख) हल्की ....

(ग) हार ....

(घ) डूबती ....

प्रश्न–5 दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(i) अचंभा ....

....

(ii) निर्मल ....

....

(iii) नित ....

....

(iv) इकट्ठे ....

....

(v) मौज–मस्ती..

....

(vi) शान ....

....

प्रश्न–6 विद्यालय के तरण ताल (स्वीमिंग पूल) में तैरते समय आपको कैसा अनुभव होता है। 6 से 7 पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

क्रिया

जिन शब्दों से काम के करने या होने का पता चलता है उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे– खाना, हँसना, होना, जाना, करना आदि।

है, हैं, था, थे भी क्रिया होती है; जैसे - आज छुट्टी है। मेरे पास पैसे थे।

क्रिया के भेद

↓

अकर्मक	**सकर्मक**
(कर्म के बिना)	**(कर्म के साथ)**

- जिस क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता होती है, वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

  जैसे –

  माँ खाना बना रही है। **सकर्मक**

  माँ ↓ कर्ता, खाना ↓ कर्म, बना रही है ↓ क्रिया

→ 'खाना' कर्म और 'बनाना' क्रिया को कर्म की आवश्यकता होती है। इसलिए यह सकर्मक क्रिया है।

- जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती है।

  बच्चा सो रहा है। **अकर्मक**

  बच्चा ↓ कर्ता, सो रहा है ↓ क्रिया

→ 'सो रहा है' क्रिया है। यहाँ कर्म नहीं और सोना' क्रिया को कर्म की ज़रूरत भी नहीं है। इसलिए यह अकर्मक क्रिया है।

1. **सही शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिएः-**

(क) परीक्षा हो .... । (रहा है/रही है)

(ख) पानी .... है। (ठंडा/ठंडी)

(ग) चाय .... है। (मीठा/मीठी)

(घ) सेना मार्च .... । (कर रहा है/कर रही है)

(ङ) रेलगाड़ी .... । (आया/आई)

(च) आग जल .... । (रहा है/रही है)

(छ) वायु चल .... । (रहा है/रही है)

(ज) 15 अगस्त को हमने आज़ादी प्राप्त .... । (की / किया)

(झ) बिच्छू डंक .... है। (मारता / मारती)

(ञ) हमने सजावट .... । (किया/की)

(ट) दुर्योधन और कर्ण में मित्रता .... । (था/थी)

(ठ) भीड़ .... । (इकट्ठा हुआ/इकट्ठी हुई)

(ड) माताजी ने चावल .... हैं। (पकाई/पकाए)

(ढ) चुटकुला सुनकर सभी को हँसी आ .... । (गया/गई)

(ण) मेरी बहन ने सोने की अँगूठी .... । (खरीदा/खरीदी)

(त) राम को परीक्षा में सफलता .... । (मिला/मिली)

2. निम्नलिखित वाक्यों में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ छाँटिए:–

1. पिताजी चले गए। ....
2. रमेश अचानक बोल उठा। ....
3. सीता कपड़े धोती है। ....
4. गाँधी जी ने देश को आज़ादी दिलाई। ....
5. उसने एक छतरी खरीदी। ....
6. अध्यापिका कक्षा में पढ़ाती हैं। ....
7. पिताजी मुझे बुलाते हैं। ....
8. बच्चा देर से सोया। ....
9. बच्चा सो रहा है। ....
10. मैं केला खाता हूँ। ....
11. गाय दूध देती है। ....
12. सविता चित्र बना रही है। ....
13. राजकुमार ने काले हिरन को छोड़ दिया। ....
14. अभिमन्यु ने धनुष फेंक दिया। ....

वृक्ष हमारे मित्र (अनुच्छेद लेखन)

जनवरी-फरवरी

नींद की करामात (पठित गद्यांश)

राहुल दशहरे की छुट्टियों में अपनी मौसी के घर गया। ''नमस्ते मौसी जी''! ''जीते रहो'', मौसी ने राहुल को आशीर्वाद दिया। ''मौसी जी! किस चीज़ की सुगंध आ रही है? अरे वाह! गाजर का हलवा मैं तो खूब सारा खाऊँगा।'' राहुल चहकते हुए बोला। राहुल ने हाथ–मुँह धोए और बड़े मज़े से गाजर का हलवा खाया। धीरे–धीरे रात हो गई, वह बोला, ''मौसी जी कोई कहानी सुनाइए न!'' मौसी ने सोचते हुए खिड़की की ओर देखा। पूर्णमासी का गोलाकार चाँद आकाश में अपनी दूधिया रोशनी फैला रहा था।

मौसी ने कहानी शुरू की–एक थी आकाश नगरी। वहाँ एक आदमी रहता था। उसका नाम था–दिन। उसकी पत्नी का नाम रात्रि था। उनके दो बच्चे थे–सूर्य और चंद्रमा। वे उन्हें प्यार से सूरज और चंदा बुलाते थे। एक दिन की बात है। सूरज और चंदा खेलने निकले। तभी एक अजगर सामने पड़ा और दोनों को निगल लिया। जब बच्चे घर नहीं पहुँचे, रात्रि और दिन परेशान हो गए। निद्रा ने उनकी मदद की, अजगर पर अपना प्रभाव जमाने लगी। अजगर ने जम्हाई ली और दोनों बच्चे बाहर निकल गए। तभी से सूर्य और चंद्रमा आसमान में रहते हैं।

प्रश्न–1 गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

क) राहुल को किस चीज़ की सुगंध आ रही थी?

....

....

ख) मौसी को खिड़की की ओर क्या दिखा?

....

....

ग) आकाश नगरी में रहने वाले परिवार के सदस्यों का नाम लिखिए?

....

....

घ) बच्चों की मदद किसने की?

....

....

प्रश्न–2 दिए गए शब्दों के समानार्थक शब्द गद्यांश में से ढूँढ़ कर लिखिए :-

(क) तरफ़– .... (ङ) खुशबू– ....

(ख) कथा– .... (च) सहायता– ....

(ग) रात– .... (छ) असर– ....

(घ) नींद– .... (ज) प्रकाश–..

प्रश्न–3 दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

(क) सूर्य ....

(ख) चंद्रमा ....

(ग) दिन ....

(घ) रात ....

(ङ) आकाश ....

प्रश्न–4 दिए गए अशुद्ध शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए :-

(क) आर्शिवाद ....

(ख) पूरनमासी ....

(ग) छुट्टीयों ....

(घ) सुगन्द ....

(ङ) मूँह ....

प्रश्न–5 दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(i) धीरे–धीरे ....

....

(ii) सुगंध ....

....

(iii) चहकते ....

....

(iv) दूधिया ....

....

प्रश्न–6 हमें एक जुट होकर क्यों काम करना चाहिए? अपने विचार 6 – 7 पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अशुद्धि शोधन

(क) शुद्ध वर्तनी

शुद्ध वर्तनी के लिए यह जानना ज़रूरी है कि शब्द कैसे बोले जाते हैं। शब्दों का सही उच्चारण करें और लिखते समय भी इसे ध्यान में रखें।

अभ्यास

(क) सही शब्द रेखांकित करें व खाली स्थान में लिखें -

आर्शीवाद	आशीर्वाद	आशिर्वाद	....
ईश्वर	इश्वर	ईशवर	....
हसना	हसँना	हँसना	....
श्रीमति	श्रीमती	श्रिमती	....
प्रकृति	प्रक्रति	प्रकृती	....
कयोंकि	कयोंकी	क्योंकि	....
कवित्री	कवयित्री	कवियित्री	....
कृपा	क्रपा	क्रिपा	....
प्रशन	प्रष्न	प्रश्न	....
श्रदधा	श्रद्धा	श्रध्धा	....

छुटटियाँ	छुट्टियाँ	छुट्टियाँ	....
दैनिक	देनिक	दैनीक	....
परिक्षा	परीक्शा	परीक्षा	....

(ख) अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कीजिए–

अडडा	....	परेशानि	....
रुपये	....	रोयी	....
सपष्ट	....	खूशी	....
पड़ाई	....	धार्मीक	....
सप्ताहिक	....	स्वसथ	....
परिक्षम	....	उपर	....

(ख) शुद्ध वाक्य

अपनी बात दूसरों को भली–भाँति समझाने के लिए वाक्य का शुद्ध होना अति आवश्यक है। शुद्ध वाक्य के लिए इन बातों का ध्यान रखें –

- वाक्य में शब्दों का क्रम सही होना चाहिए।
- वाक्य में कर्ता और क्रिया के लिंग व वचन समान होने चाहिए।
- वाक्य में कर्म और क्रिया के लिंग व वचन समान होने चाहिए।

अभ्यास

1. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करिए -

क) मैं उस .... को जानता हूँ। (लड़का/लड़के)

ख) .... कहाँ जाना है? (उसने/उसे)

ग) .... लोगों को बुलाओ। (वे/उन)

घ) .... पापा आए हैं। (मेरा/मेरे)

ङ) यह किताब .... है। (मेरी/मेरे)

च) मेज़ पर खाना .... है। (रखा/रखी)

2. सही वाक्य के आगे (✓) और गलत वाक्य के आगे (X) का चिह्न लगाइए।

क) रुक गया वह चलते – चलते। ( )

ख) वह मुंबई गया था । ( )

ग) पार्टी है कल मेरे घर में। ( )

घ) मैंने अपना काम कर लिया। ( )

ड.) मुझे कपड़ा चाहिए कमीज़ के लिए। ( )

च) माँ खिलौने लाई मेरे लिए। ( )

3. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए -

क) मेरे को उसने बुलाया था।

ख) राज से मैंने बात नहीं करनी।

ग) घर में सारों कमरों में पंखे हैं।

घ) वह मीना का घर को जा रही है।

ङ) मैं यह फ़िल्म देखा हूँ।

च) छोटा लड़का को यहाँ बुलाओ।

शुद्ध वाक्य -

क) ....

ख) ....

ग) ....

घ) ....

ङ) ....

च) ....

कहानी लेखन

शीर्षक ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ऋषि और चुहिया (अपठित गद्यांश)

'जंगल में एक ऋषि का सुंदर आश्रम था। आश्रम के आस–पास का वातावरण बड़ा शांत और मनोरम था। विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षी आश्रम के पास निर्भय होकर घूमते थे।

एक दिन ऋषि एक वृक्ष के नीचे बैठे आँखें मींचे किसी विचार में डूबे थे। तभी एक छोटी चुहिया भागती हुई आई और ऋषि की गोद में बैठ गई। वह बहुत डरी हुई थी। उसने ऋषि से कहा, "हे मुनिवर, मुझे बचा लीजिए। वह बिल्ली मुझे खाना चाहती है।"

ऋषि ने चुहिया के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "डरो मत! मैं तुम्हें बिल्ली बना देता हूँ।"

ऋषि ने चुहिया को बिल्ली बना दिया। अब बिल्ली बनी चुहिया, दूसरी बिल्लियों के साथ घूमने लगी। उसे उनका डर न रहा।"

अभ्यास

उत्तर लिखिए।

(क) आश्रम के आस-पास के वातावरण का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

(ख) चुहिया ने ऋषि से क्या कहा?

....

....

....

....

(ग) ऋषि ने चुहिया के सिर पर हाथ रखते हुए क्या कहा?

....

....

....

....

(घ) चुहिया ने बिल्लियों से डरना क्यों छोड़ दिया?

....

....

....

....

कहानी लेखन

चित्र देखिए और समझकर कहानी लिखिए।

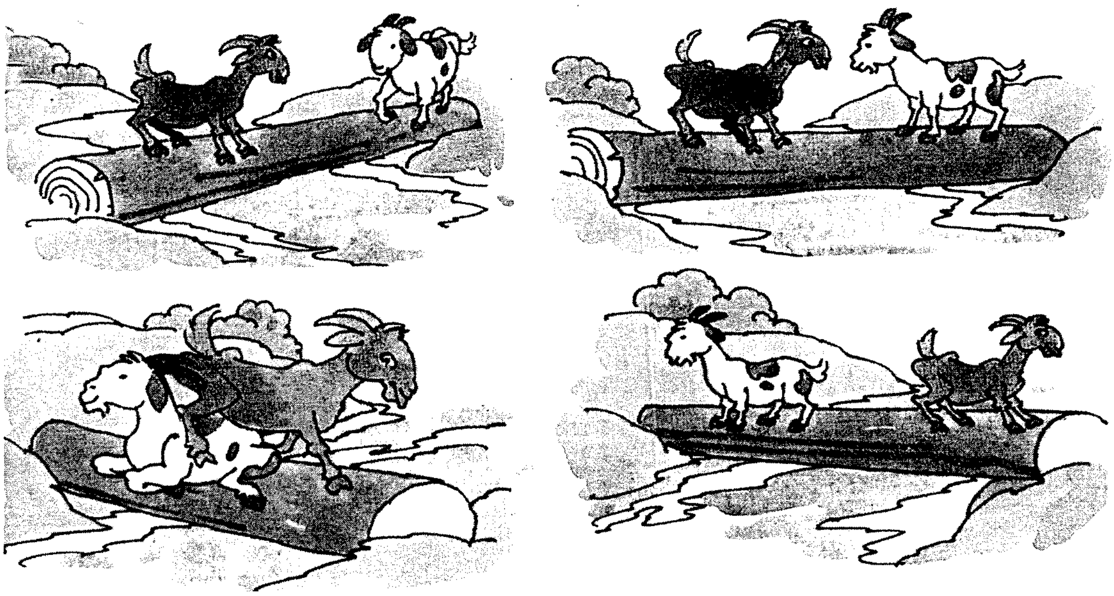

शीर्षक ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षा ....

....

....

कहानी लेखन

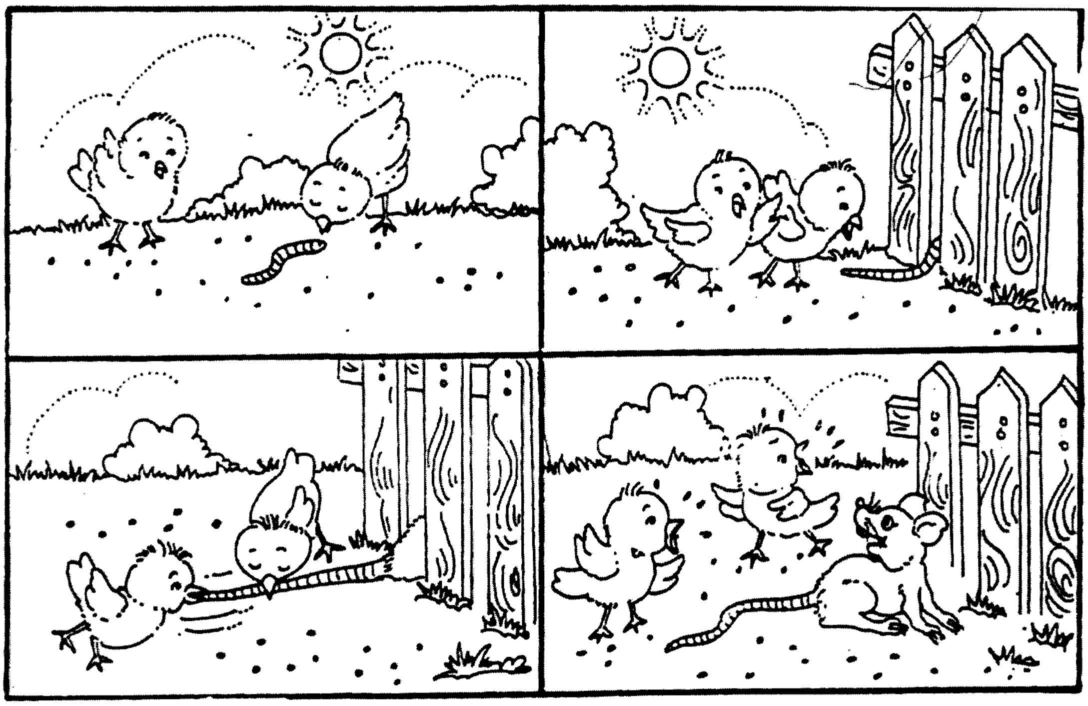

शीर्षक

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षा ....

....

विलोम शब्द

विलोम का अर्थ है विपरीत अर्थ वाला शब्द।

ऐसे शब्द जो एक-दूसरे का विपरीत/उल्टा अर्थ देते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

कुछ प्रमुख विलोम शब्द (प्रथम सत्र)

1.	अमृत	×	विष
2.	भला	×	बुरा
3.	सुख	×	दुख
4.	विजय	×	पराजय
5.	मधुर	×	कटु
6.	सरल	×	कठिन
7.	लाभ	×	हानि
8.	स्वाधीन	×	पराधीन
9.	कोमल	×	कठोर
10.	यश	×	अपयश

(द्वितीय सत्र)

11.	आकाश	×	पाताल
12.	चतुर	×	मूर्ख
13.	शत्रु	×	मित्र
14.	हर्ष	×	शोक
15.	स्वतंत्र	×	परतंत्र
16.	दिन	×	रात
17.	सुगम	×	दुर्गम
18.	आदर	×	अनादर
19.	सौभाग्य	×	दुर्भाग्य
20.	स्वच्छ	×	अस्वच्छ

क) नीचे दिए शब्दों में से उचित विलोम शब्द चुनिए और उस पर गोला लगाइए:

1.	विशाल	–	बड़ा, लघु, ऊँचा
2.	मानव	–	नर, दानव, जन
3.	शत्रु	–	मित्र, सखा, बंधु
4.	प्रसन्न	–	खुश, अप्रसन्न, दुखी

ख) रेखांकित शब्द का विलोम भरकर वाक्य पूरे करिए।

1. हर व्यक्ति में कई .... होते हैं, तो कुछ <u>अवगुण</u> भी होते हैं।
2. युद्ध में राजा की <u>विजय</u> और उसके शत्रु की .... हुई।
3. गांधी जी कहते थे कि <u>हिंसा</u> से नहीं .... से काम लेना चाहिए।
4. मैं सबका <u>हित</u> चाहती हूँ, किसी का .... नहीं।
5. आज से कई साल पहले हम <u>परतंत्र</u> थे, पर अब हम................................ हैं।

ग) विलोम शब्द लिखिए -

(i) इच्छा	×	....	(vi) आस्तिक	×	....
(ii) स्वस्थ	×	....	(vii) शाकाहारी	×	....
(iii) बुराई	×	....	(viii) शांति	×	....
(iv) जन्म	×	....	(ix) आगे	×	....
(v) ठंडा	×	....	(x) उदय	×	....

घ) दिए गए उदाहरण के अनुसार एक शब्द लिखिए -

उदाहरण - ज्ञान की कमी - अज्ञान

(i) जो उपयोगी न हो ....

(ii) जो वीर न हो ....

(iii) इच्छा का अभाव ....

(iv) जो देशी न हो ....

(v) जो साधारण न हो ....

(vi) जो परिचित न हो ....

(vii) जो प्रिय न हो ....

(viii) जो प्रसन्न न हो ....

पर्यायवाची शब्द

जो शब्द समान अर्थ बताते हैं, वे पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं।

पर्यायवाची शब्दों की सूची : (प्रथम सत्र)

1.	पेड़	–	वृक्ष, तरु, विटप
2.	पर्वत	–	पहाड़, नग, गिरि
3.	बाग	–	बगीचा, उपवन, वाटिका
4.	घर	–	गृह, सदन, भवन
5.	सूर्य	–	रवि, दिनकर, भास्कर
6.	माता	–	जननी, माँ, अंबा
7.	स्त्री	–	महिला, औरत, नारी
8.	आँख	–	नेत्र, नयन, लोचन
9.	बादल	–	जलद, जलधर, घन
10.	संसार	–	विश्व, जगत, दुनिया

(द्वितीय सत्र)

11.	राजा	–	नृप, भूप, भूपति
12.	रात	–	रात्रि, रजनी, निशा
13.	जल	–	पानी, नीर, सलिल
14.	मानव	–	मनुष्य, आदमी, नर

15. पृथ्वी — धरा, भूमि, वसुधा
16. कमल — राजीव, नीरज, पंकज
17. आकाश — अंबर, गगन, नभ
18. वायु — हवा, समीर, पवन
19. चाँद — चंद्रमा, शशि, मयंक
20. ईश्वर — परमात्मा, प्रभु, ईश

उचित समानार्थी शब्द चुनकर खाली स्थान में लिखिए -

1. शत्रु .... (दोस्त, मनुष्य, दुश्मन)
2. बगीचा .... (उपवन, वन, जंगल)
3. सूर्य .... (पानी, दिवाकर, सलिल)
4. रात .... (निशा, नीर, वसुधा)
5. आकाश .... (विश्व, अंबर, पेड़)

नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

1. आँख ....
2. कमल ....
3. माता ....
4. जल ....
5. मित्र ....

मुहावरे

ऐसे शब्द-समूह जिनका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में होता है, मुहावरे कहलाते हैं। हम अपनी बातों को दो तरीके से कह सकते हैं-

साधारण तरीके से या विशेष तरीके से।

साधारण तरीके से - महेश को बहुत गुस्सा आ रहा है।

विशेष तरीके से - महेश गुस्से से लाल–पीला हो रहा है।

विशेष तरीके में मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

अभ्यास

प्र. 1. चित्र देखकर मुहावरा पूरा करिए और उसका अर्थ लिखिए-

अर्थ

क. 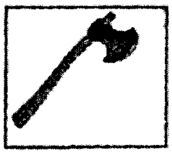 अपने पाँव पर .... मारना = ...

ख. .... थपथपाना =....................................

ग. 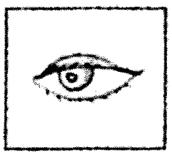 .... का तारा होना =.............................

घ. 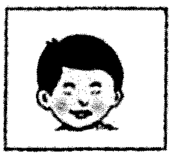 .... में पानी आना =.............................

ङ. 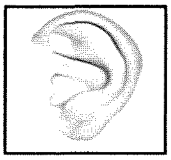 .... पर जूँ न रेंगना = ...

मुहावरे (प्रथम सत्र)

1.	अँगूठा दिखाना	–	साफ़ इनकार करना
2.	अंग–अंग ढीला होना	–	बहुत थक जाना
3.	आग बबूला होना	–	गुस्से से भर जाना
4.	कान पर जूँ तक न रेंगना	–	कुछ असर न होना
5.	किस्मत खुलना	–	भाग्य चमकना
6.	घी के दीए जलाना	–	बहुत खुश होना
7.	छक्के छुड़ाना	–	हराना
8.	दाँतों तले उँगली दबाना	–	आश्चर्य प्रकट करना
9.	नमक–मिर्च लगाना	–	बढ़ा–चढ़ाकर कहना
10.	बाग–बाग होना	–	बहुत प्रसन्न होना

(द्‌वितीय सत्र)

11.	नौ दो ग्यारह होना	–	भाग जाना
12.	पत्थर की लकीर	–	पक्की बात
13.	पेट में चूहे कूदना	–	बहुत भूख लगना
14.	भीगी बिल्ली बनना	–	डर जाना
15.	लाल–पीला होना	–	क्रोध करना
16.	हाथ मलते रह जाना	–	पछताना
17.	श्रीगणेश करना	–	शुरू करना
18.	आँखे बिछाना	–	आदर सत्कार करना
19.	ईद का चाँद होना	–	बहुत समय बाद दिखाई देना
20.	कान भरना	–	चुगली करना

प्रश्न–1 मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए-

(क) आँख लगना	शाबाशी देना
(ख) पीठ थपथपाना	नींद आना
(ग) दंग रह जाना	बहुत प्यारा
(घ) आँखों का तारा	हैरान रह जाना

प्रश्न–2 वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरों को पूरा कीजिए-

(क) मिठाइयाँ देखकर रोहित के मुँह में .... आ गया।

(ख) भूख के मारे मेरे पेट में .... लगे।

(ग) हमारी टीम ने दूसरी टीम के दाँत .... कर दिए।

(घ) मेरे काम में टाँग .... ।

(ङ) अरे! तुम तो ईद का .... हो।

चित्र-वर्णन

चित्र वर्णन एक ऐसी कला है जिसमें मन के भाव प्रकट होते हैं। चित्र को देखकर आपके मन मे जो भाव उठते हैं, उन्हें आप लिखकर प्रकट करते हैं यही चित्र वर्णन कहलाता है।

इसको बनाने के लिए अपनी जितनी बुद्धि, कल्पना और भावों का प्रयोग किया जाता है चित्र वर्णन उतना ही सुंदर उभरकर सामने आता है।

चित्र–वर्णन में ध्यान देने योग्य बातें।

- चित्र को देखकर सबसे पहले उसका शीर्षक तय करना चाहिए।
- चित्र को ध्यान से देखें और उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।
- पहला वाक्य ऐसा होना चाहिए जो चित्र के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न करे।
- चित्र में दिए गए सभी दृश्यों, व्यक्तियों और वस्तुओं का वर्णन अवश्य करें।
- चित्र–वर्णन रोचक और लुभावना होना चाहिए।

संवाद-लेखन

संवाद का अर्थ है बातचीत। एक–दो व्यक्तियों के साथ हुई बातचीत ही असली बातचीत होती है, क्योंकि इसी में अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाई जा सकती है। इसमें एक कहता है, दूसरा सुनता है, फिर दूसरा कहता है और पहला सुनता है। इस प्रकार बातचीत का सिलसिला निरंतर आगे बढ़ता रहता है।

संवाद के विषय में ध्यान रखने योग्य बातें।

- संवाद विषय और भावों के अनुकूल होना चाहिए।
- संवाद में उचित संबोधन एवं अभिवादन का प्रयोग करना चाहिए।
- उम्र का ध्यान रखना चाहिए मर्यादा एवं सम्मान को बनाए रखना चाहिए।
- बातचीत अवसर के अनुकूल होनी चाहिए।
- बातचीत में बनावटीपन नहीं होना चाहिए। सोच–समझकर अपनी बात कहनी चाहिए।
- संबंधो की सुगंध बातचीत में होनी चाहिए।
- बातचीत भाषण नहीं है इसलिए सबको बोलने का अवसर मिलना चाहिए।

एक संवाद

उत्सव : हैलो! अविरल कैसे हो?

अविरल : ओ उत्सव! आओ बैठो।

उत्सव : क्या पढ़ाई कर रहे थे?

अविरल : नहीं, कल एक प्रतियोगिता है न, उस की तैयारी कर रहा था।

उत्सव : अविरल एक बात कहूँ, तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा।

अविरल : नहीं, नहीं, बोलो।

उत्सव : तुम मंच पर बोलते तो बहुत अच्छा हो, पर जब तुम खड़े होते हो तो एक पैर पर सारा बल देखकर खड़े होते हो। यह देखने में अच्छा नहीं लगता।

अविरल : धन्यवाद उत्सव! मैंने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था।

उत्सव : मेरा ऐसा कहना तुम्हें ख़राब तो नहीं लगा न।

अविरल : अरे नहीं नहीं। बल्कि मुझे खुशी हुई कि तुमने अपना समझकर मुझे मेरी गलती बताई।

विज्ञापन - लेखन

आज का युग विज्ञापन का युग है। दूरदर्शन के कार्यक्रम हों, पत्र–पत्रिकाएँ हों या शहर की दीवारें हों सब तरफ़ विज्ञापन नज़र आते हैं।

विज्ञापन का उद्देश्य अपनी वस्तुओं को बेचने के लिए उनके बारे में जानकारी देते हुए उनका प्रचार करना है। विज्ञापनों को देखकर ही हमें नई–नई वस्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है। वस्तुओं का चुनाव करने में मदद मिलती है, विज्ञापन हमारे मन को प्रभावित करते हैं।

विज्ञापन बनाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

- विज्ञापन के लिए बनाया गया चित्र–रंगीन, स्पष्ट एवं आकर्षक होना चाहिए।
- वस्तुओं के गुणों के बारे में सही जानकारी देनी चाहिए।
- बढ़ा चढ़ा कर नहीं बताना चाहिए।
- लुभावने दृश्यों द्वारा गुमराह नहीं करना चाहिए।
- विज्ञापन इतना आकर्षक होना चाहिए कि ग्राहक उसे खरीदने के लिए तैयार हो जाए।

आशुभाषण (Just a Minute)

आशुभाषण एक प्रकार का भाषण है, जिसमें विषय तत्काल दिया जाता है और वक्ता के पास एक से दो मिनट तक का समय बोलने के लिए होता है।

आशुभाषण बोलते समय निम्न नियमों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे–

1. वक्ता को अपने खड़े रहने के तरीके पर ध्यान देना चाहिए। बोलते समय हिलना–डुलना नहीं चाहिए तथा सबकी तरफ़ देखकर बोलना चाहिए।
2. वक्ता को बोलने से पहले अपनी अध्यापिका और मित्रें को संबोधित करना चाहिए तथा समाप्ति के बाद धन्यवाद अवश्य बोलना चाहिए।
3. आरंभ में स्वयं और विषय के बारे में बताना भी आवश्यक है।
4. वक्ता को ध्यान रखना चाहिए कि वह इतना तेज़ बोले कि सभी उसे आसानी से सुन सकें।
5. वक्ता को अपने विचारों को क्रमबद्ध करके प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।
6. वक्ता में आत्मविश्वास, धैर्य, विविध विषयों का ज्ञान, तुरंत सोचने की क्षमता आदि गुणों का होना भी आवश्यक है।
7. वक्ता को विषय मिलते ही, तुरंत उस पर विचार करना आरंभ कर देना चाहिए और विषय को कुछ मुख्य बिंदुओं में बाँटकर बोलना चाहिए।
8. अगर उपर्युक्त बिंदुओं पर ध्यान दिया जाए तो आशुभाषण का प्रस्तुतिकरण आसान हो जाएगा।

आशुभाषण के लिए कुछ शीर्षक-

- अगर मैं एक दिन के लिए प्रधानचार्या बन जाऊँ।
- उस रात जब मैं घर पर अकेला था/अकेली थी।
- उस रात जब मैंने चाँद से बातें की।
- मेरा सपना।
- मेरा प्रिय खिलाड़ी।
- स्कूल से जब हम पिकनिक मनाने गए।
- मेरा सबसे अच्छा दोस्त।
- जब मैंने अपने मित्र की सहायता की।
- मैं और मेरा देश।
- होली, दीपावली या क्रिस्मस के त्योहार पर आप क्या करते हैं।

आओ कहानियाँ पढ़ें

(केवल पठन)

थोड़ी सी खुरचन

एक बार की बात, राजा कृष्णदेव राय के दरबार में मथुरा से एक बड़े विद्वान आए। बोले– ''महाराज, मेरा नाम मेखला पंडित है। मैंने ऐसी साधना की है कि मुझे कभी क्रोध नहीं आता।''

राजा मेखला पंडित से बड़े प्रभावित हुए। उन्हें शाही अतिथिशाला में ठहराया गया। कुछ दिन बाद राजा ने दरबारियों से मेखला पंडित के बारे में पूछा। सबने कहा– ''महाराज, वह तो वाकई पहुंचे हुए साधक हैं। कोई कुछ भी कहे, उन्हें क्रोध नही आता।''

राजा ने देखा, तेनालीराम चुप बैठा मुसकरा रहा है। पूछने पर उसने कहा– ''महाराज, मैं जरा नजदीक से उन्हें देखूंगा, तभी कुछ कहूंगा।''

अगले दिन की बात, जिस कक्ष में मेखला पंडित ठहरे थे, उसके बाहर एक बच्चा पहुंचा। जोर से बोला– ''अजी, क्या पेड़े और खुरचन बेचने वाले पंडित जी यहीं रहते हैं?'' सुनकर मेखला पंडित उत्सुकता से बाहर आए। मुसकराकर बोले– ''बेटा, मैं आया तो मथुरा से ही हूं, पर तुमने गलत सुना। मैं तो पेड़े और खुरचन बेचने नहीं आया.......!''

उस लड़के के जाने के कुछ ही देर बाद पांच-सात लड़कों का झुंड वहां आ गया। उनमें से एक बोला– ''क्यों जी, आप ही मथुरा से पेड़े और खुरचन बेचने आए हैं? हम आपको मुंहमांगे पैसे देंगे, मगर खुरचन...!''

अब मेखला पंडित के लिए बर्दाश्त करना मुश्किल हो गया। जोर से चिल्लाए– ''तुम यहां से जाते हो या नहीं...... ?'' लड़के झट उड़न-छू हो गए।

पर उसी शाम को एक पग्गड़धारी बूढ़ा मेखला पंडित के कक्ष में आ पहुंचा। बोला– "अरे बेटा, सुना है, बड़ी अच्छी और स्वादिष्ट खुरचन लाए हो मथुरा से। हमने तो बचपन में खाई थी, तब से तरस गए खुरचन खाने को! तुम अपने पैसे पहले गिनकर ले लो, मगर खुरचन जरा बढ़िया...।" –कहकर बूढ़े ने एक लाल सी थैली खनकाई।

अब तो मेखला पंडित ने गुस्से से लाल–पीले होकर पास में रखी लाठी उठाई, और उसे मारने के लिए दौड़े। आगे–आगे बूढ़ा, पीछे–पीछे लाठी उठाए बंडित जी...। पास के एक भवन से राजा और दरबारी भी छिपकर यह माजरा देख रहे थे।

इतने में उस बूढ़े ने अपनी पगड़ी उतार फेंकी। सामने तेनालीराम मुसकराता खड़ा था। देखकर मेखला पंडित बुरी तरह शर्मिंदा हो गए। उसके बाद वह कब गायब हो गए कुछ पता न चला।

इस कहानी से मैने सीखा कि..

....

....

पेड़ का घमंड

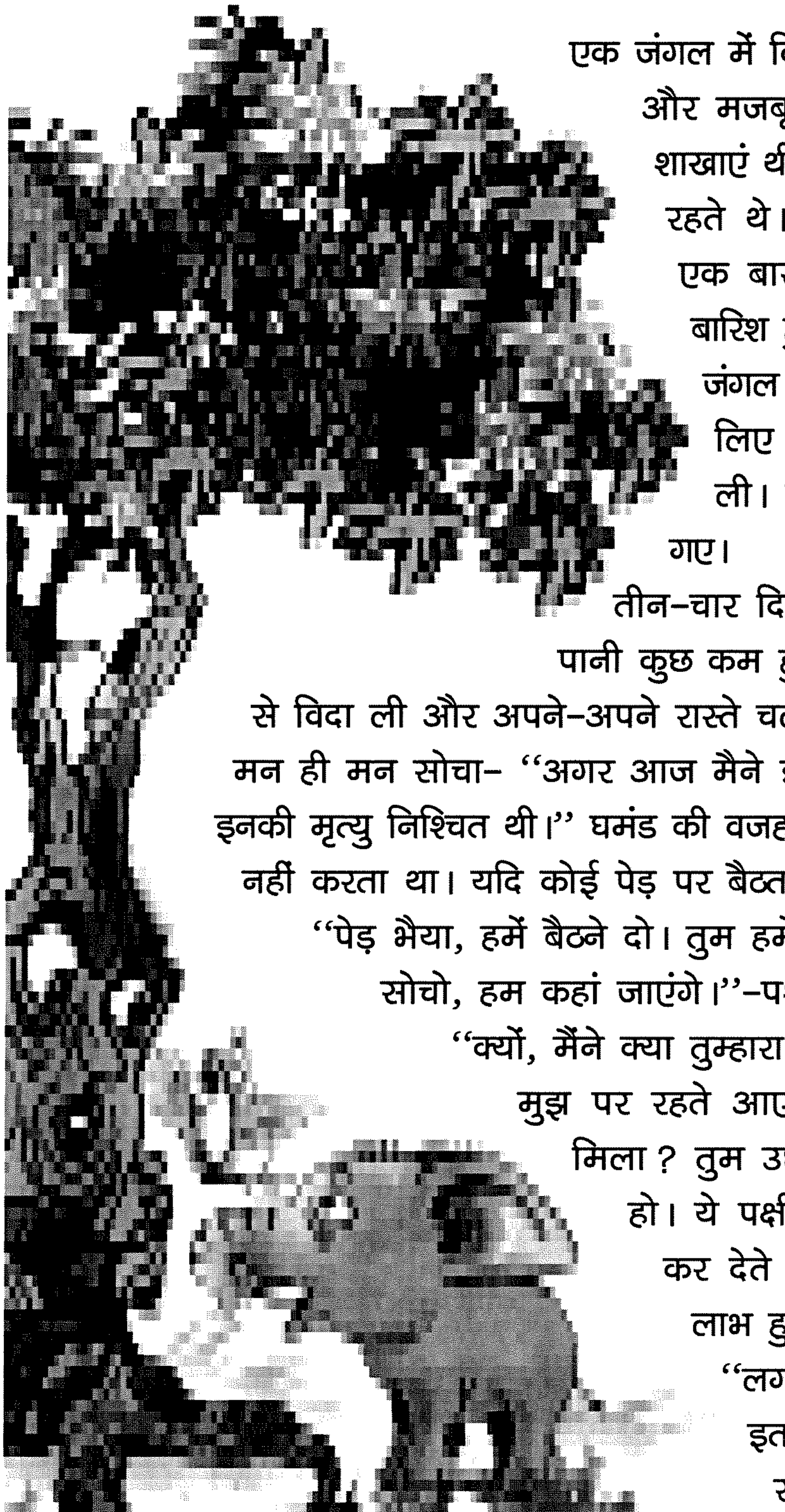

एक जंगल में विशाल पेड़ था। उसका तना बहुत मोटा और मजबूत था। पेड़ की अनगिनत छोटी-बड़ी शाखाएं थीं, जिन पर बहुत से पंक्षी और जानवर रहते थे।

एक बार जंगल और आसपास बड़े जोर की बारिश हुई। दिन-रात खूब पानी बरसा, जिससे जंगल में बाढ़ आ गई। अपनी जान बचाने के लिए बहुत से जानवरों ने पेड़ पर शरण ली। बड़ी संख्या में पशु-पक्षी पेड़ पर चढ़ गए।

तीन-चार दिनों तक जानवर पेड़ पर ही बैठे रहे। पानी कुछ कम हुआ, तो एक-एक करके सभी ने पेड़ से विदा ली और अपने-अपने रास्ते चले गए। पेड़ को घमंड हो गया। उसने मन ही मन सोचा- "अगर आज मैने इन पंछियों की मद्द न की होती, तो इनकी मृत्यु निश्चित थी।" घमंड की वजह से पेड़ अब पक्षियों से सीधे मुंह बात नहीं करता था। यदि कोई पेड़ पर बैठता, तो उसे ताना देकर भगा देता।

"पेड़ भैया, हमें बैठने दो। तुम हमें अपनी डालों पर रहने नहीं दोगे तो सोचो, हम कहां जाएंगे।"-पशु-पक्षी कहते।

"क्यों, मैंने क्या तुम्हारा ठेका ले रखा है! बरसों से तुम लोग मुझ पर रहते आए हो, बदले में आज तक मुझे क्या मिला? तुम उछल-कूद मचाकर मेरी डालें तोड़ देते हो। ये पक्षी बीट करके मेरे पूरे शरीर को गंदा कर देते हैं। इतना कुछ सहने पर मुझे क्या लाभ हुआ?" -पेड़ बोला।

"लगता है, तुम्हें किसी ने बहका दिया है। इतने स्वार्थी मत बनो। हमें अपने साथ रहने दो।"-जानवरों ने विनती की। पर पेड़ ने उनकी एक न सुनी।

मजबूर होकर उन्हें वहां से जाना पड़ा थोड़ी ही देर में पूरा पेड़ खाली हो गया।

"तुम शायद नहीं जानते, आज तुम हमारे काम आ रहे हो। हो सकता है, कल तुम्हें हमारी मदद की जरूरत पड़ जाए।" –टिंकू हाथी ने पेड़ को समझाया, तो उसने ठहाका लगाया।

"भला, तुम लोग मेरे क्या काम आओगे। एक भी उदाहरण बता दो, जब मुझे तुम्हारी मदद की आवश्यकता पड़ी हो?" –पेड़ अपनी तारीफ करता हुआ बोला। बेचारा टिंकू चुपचाप चला गया।

एक दिल न जाने कैसे जंगल में आग लग गई। देखते ही देखते चारों तरफ आग फैलने लगी। टिंकू ने खतरा भांपकर अपने साथी हाथियों को इकट्ठा किया। उन सबने तालाब से पानी सूंड में भरकर आग पर डालना शुरू किया।

वक्ता पर पानी डालने से आग फैलने से पहले की काबू में आ गई। इस घटना से भी उस विशाल पेड़ ने कोई सबक नहीं सीखा कि यदि टिंकू आग को न रोकता, तो वह जलकर भस्म हो जाता। पर पेड़ का घमंड ज्यों का त्यों बना रहा।

एक दिन लकड़ी काटने वाले तस्कर जंगल में आए। वे अपने साथ बड़े-बड़े आरे लेकर आए थे। उनकी नजर मोटे तने वाले पेड़ पर पड़ी, तो लकड़ी के लालच में वे उसे काटने लगे।

अपना तना कटता देख, पेड़ घबरा उठा। "मूझे मत काटो! रूको, मुझे मत काटो.... बचाओ-बचाओ!"–वह मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगा। पहली बार उसे अपने कमजोर और असहाय होने का एहसास हुआ। चाह कर भी वह उन सत्करो का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था।

जानवर घमंड़ी पेड़ की मदद करने को तैयार हो गए। बंदरों ने पेड़ से कच्चे आम तोड़े और तस्करों पर निशाना लगाकर मारने शुरू कर दिए। इस आक्रमण से वे घबरा गए और अपने आरे वहीं छोड़कर भाग निकले। सभी जानवरों ने मिलकर उन्हें जंगल से बाहर खदेड़ दिया।

इस घटना ने घमंडी पेड़ की आंखें खोल दीं। उसे अपनी भूल का एहसास हो गया। पेड़ में आए बदलाव से सभी पशु-पक्षी बेहद खुश थे। विशाल पेड़ फिर से गुलजार हो गया। सब हिल-मिलकर प्रेमपूर्वक रहने लगे।

इस कहानी से मैने सीखा कि...

....

....

अनोखा संदेश

एक बार की बात, राजा कृष्णदेव राय के बचपन के प्रिय मित्र आनंद नंदिकेशवम उनसे मिलने आए हुए थे। राजमहल में उनके लिए विशेष भोज का इंतजाम था। उस दिन राजा दरबार में नहीं आए। दरबारी भी थोड़ी फुरसत में थे। इस बात की चर्चा चल निकली कि राजा के यहां भोज के लिए कौन–कौन से पकवान और स्वादिष्ट मिठाइयां बनी होंगी।

सबके साथ–साथ तेनालीराम भी ये बाते सुनकर मुसकरा रहा था। तभी अचानक मंत्री ने कहा– ''तेनालीराम, सब तुम्हारी चतुराई की बहुत तारीफ करते हैं। अगर तुम राजा के यहां से दावत खाकर आ जाओ, तो मैं तुम्हें दस स्वर्ण मुद्राएं इनाम में दूंगा।'' पुरोहित ने भी हंसकर नई पगड़ी देने की घोषणा कर दी। सब सोच रहे थे, आज तो राजमहल में तेनालीराम को कोई पूछेगा नहीं, खूब भद होगी।

तेनालीराम उसी समय मुसकराता हुआ चल पड़ा। राजमहल पहुंचकर उसने दरबान से अंदर कहलवाया–''जाओ, जाकर राजा से कहना कि तेनालीराम को सपने में एक देवदूत ने आपके लिए जरूरी संदेश दिया है। वह उसे अभी सुनाना चाहता है।''

दरबान ने राजा से कहा, तो उन्हें उत्सुकता हुई। बोले–''जाओ भेज दो...।'' उन्होंने अपने मित्र आनंद नंदिकेशवम और महारानी को बताया। महारानी बोलीं– ''लगता है, तेनालीराम कोई निराला ही संदेश लाया है।''

जैसे ही तेनालीराम अंदर आया, राजा ने अधीरता से कहा– "हां, तो बताओ तेनालीराम, क्या कहा था देवदून ने? जल्दी से सुना डालो।" पर तेनालीराम जल्दी-जल्दी चलकर आया था। सांस कुछ फूली हुई थी। वह कुछ कहता, इससे पहले महारानी ने कहा– "तेनालीराम, पहले तुम खाना खाओ। फिर तसल्ली से बताना।

महारानी ने खुद भोजन परोसा। तेनालीराम ने खूब स्वाद लेकर खाया। फिर राजा ने अपने हाथ से उसे पान का बीड़ा दिया। थोड़ी देर बाद राजा कृष्णदेव राय ने पूछा– "हां तो तेनालीराम, अब बताओ, देवदूत ने क्या संदेश दिया है?"

तेनालीराम मुसकराया। बोला– "महाराज, देवदूत ने यही संदेश दिया था कि तुम महाराज के महल में जाना। वहां स्वादिष्ट भोजन और एक से एक बढ़िया पकवान तुम्हें खाने को मिलेंगे।"

सुनकर राजा कृष्णदेव राय हंस पड़े। महारानी और आदंद नंदिकेशवम भी मंद-मंद मुसकरा रहे थे। बाद में दरबारियों को तेनालीराम की चतुराई का पता चला, तो वे दंग रह गए। मंत्री को उसे दस स्वर्ण मुद्राएं और पुरोहित को नई पगड़ी देनी पड़ी।

इस कहानी से मैने सीखा कि...

....

....

उधार का बोझ

एक बार किसी वित्तीय समस्या में फँसकर तेनाली राम ने राजा कृष्ण देव राय से कुछ रुपए उधार लिए थे। समय बीतता गया और पैसे वापस करने का समय भी निकट आ गया। परन्तु तेनाली के पास पैसे लौटाने का कोई प्रबन्ध नहीं हो पाया था। सो उसने उधार चुकाने से बचने के लिए एक योजना बनाई।

एक दिन राजा को तेनाली राम की पत्नी की ओर से एक पत्र मिला। उस पत्र में लिखा था कि तेनाली राम बहुत बीमार है। तेनाली राम कई दिनों से दरबार में भी नहीं आ रहा था, इसलिए राजा ने सोचा कि स्वयं जाकर तेनाली से मिला जाए। साथ ही राजा को भी संदेह हुआ कि कहीं यह उधार से बचने के लिए तेनाली राम की कोई योजना तो नहीं है।

राजा तेनाली राम के घर पहुँचे। वहाँ तेनाली राम कम्बल ओढ़कर पलंग पर लेटा हुआ था। उसकी ऐसी अवस्था देखकर राजा ने उसकी पत्नी से कारण पूछा। वह बोली, "महाराज, इनके दिल पर आपके दिए हुए उधार का बोझ है। यही चिन्ता इन्हें अन्दर ही अन्दर खाए जा रही है और शायद इसी कारण यह बीमार हो गए।"

राजा ने तेनाली को सांत्वना दी और कहा, "तेनाली, तुम परेशान मत होओ। तुम मेरा उधार चुकाने के लिए बँधे नहीं हुए हो। चिन्ता छोड़ो और शीघ्र स्वस्थ हो जाओ।"

यह सुन तेनाली राम पलंग से कूद पड़ा और हँसते हुए बोला, "महाराज, धन्यवाद।"

"यह क्या है, तेनाली? इसका मतलब तुम बीमार नहीं थे। मुझसे झूठ बोलने का तुम्हारा साहस कैसे हुआ?" राजा ने क्रोध में कहा।

"नहीं नहीं, महाराज, मैंने आपसे झूठ नहीं बोला। मैं उधार के बोझ से बीमार था। आपने जैसे ही मुझे उधार से मुक्त

किया, तभी से मेरी सारी चिन्ता खत्म हो गई और मेरे ऊपर से उधार का बोझ हट गया। इस बोझ के हटते ही मेरी बीमारी भी जाती रही और मैं अपने को स्वस्थ महसूस करने लगा। अब आपके आदेशानुसार मैं स्वतंत्र, स्वस्थ व प्रसन्न हूँ।"

हमेशा की तरह राजा के पास कहने के लिए कुछ न था, वह तेनाली की योजना पर मुस्करा पड़े।

जादुई कुएँ

एक बार राजा कृष्णदेव राय ने अपने गृहमंत्री को राज्य में अनेक कुएँ बनाने का आदेश दिया। गर्मियाँ पास आ रही थीं, इसलिए राजा चाहते थे कि कुएँ शीघ्र तैयार हो जाएँ, ताकि लोगों को गर्मियों में थोड़ी राहत मिल सके। गृहमंत्री ने इस कार्य के लिए शाही कोष से बहुत-सा धन लिया। शीघ्र ही राजा की आज्ञानुसार नगर में अनेक कुएँ तैयार हो गए। इसके बाद एक दिन राजा ने नगर भ्रमण किया और कुछ कुंओं का स्वयं निरीक्षण किया। अपने आदेश को पूरा होते देख वह संतुष्ट हो गए।

गर्मियों में एक दिन नगर के बाहर से कुछ गाँव वाले तेनाली राम के पास पहुँचे, वे सभी गृहमंत्री के विरुद्ध शिकायत लेकर आए थे। तेनाली राम ने उनकी शिकायत सुनी और उन्हें न्याय प्राप्त करने का रास्ता बताया। योजनानुसार तेनाली राम अगले दिन राजा से मिले और बोले, "महाराज! मुझे विजय नगर में

कुछ चोरों के होने की सूचना मिली है। वे हमारे कुएँ चुरा रहे हैं।"
इस पर राजा बोले, "क्या बात करते हो, तेनाली! कोई चोर कुएँ को कैसे चुरा सकता है?"
"महाराज! यह बात आश्चर्यजनक जरुर है, परन्तु सच है, वे चोर अब तक कई कुएँ चुरा चुके हैं।" तेनाली राम ने बहुत ही भोलेपन से कहा।
उसकी बात को सुनकर दरबार में उपस्थित सभी दरबारी हँसने लगे।
महाराज ने कहा, "तेनाली राम, तुम्हारी तबियत तो ठीक है। आज कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो? तुम्हारी बातों पर कोई भी व्यक्ति विश्वास नहीं कर सकता।"

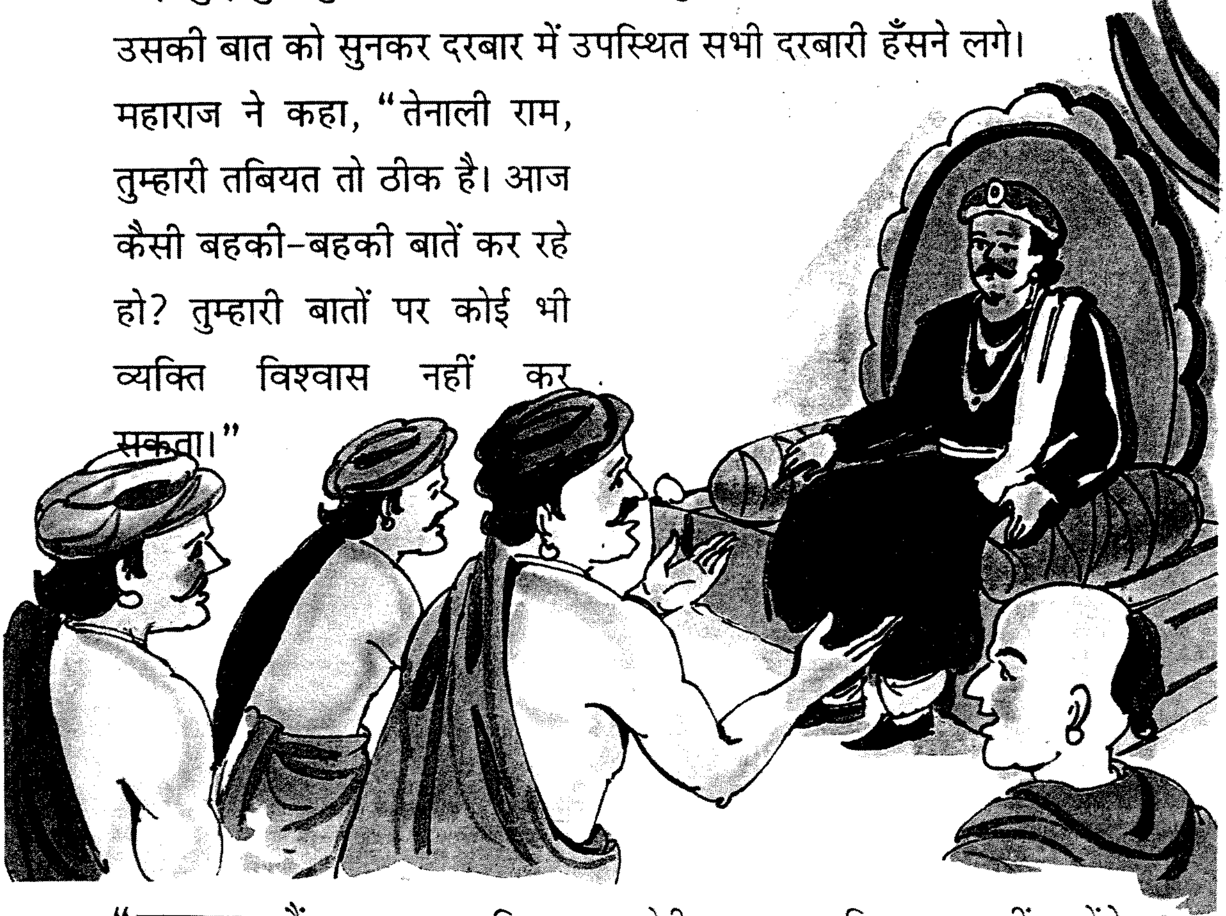

"महाराज! मैं जानता था कि आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करेंगे, इसलिए मैं कुछ गाँव वालों को साथ लाया हूँ। वे सभी बाहर खड़े हैं। यदि आपको मुझ पर विश्वास नहीं है, तो आप उन्हें दरबार में बुलाकर पूछ लीजिए। वह आपको सारी बात विस्तारपूर्वक बता देंगे।"
राजा ने बाहर खड़े गाँव वालों को दरबार में बुलवाया। एक गाँव वाला बोला, "महाराज! गृहमंत्री द्वारा बनाए गए सभी कुएँ समाप्त हो गए हैं।

आप स्वयं चलकर देख सकते हैं।"

राजा ने उनकी बात मान ली और गृहमंत्री, तेनाली राम, कुछ दरबारियों तथा गाँव वालों के साथ कुओं का निरीक्षण करने के लिए चल दिए। पूरे नगर का निरीक्षण करने के पश्चात उन्होंने पाया कि राजधानी के आस-पास के अन्य स्थानों तथा गाँवों में कोई कुआँ नहीं है। राजा को यह पता लगते देख गृहमंत्री घबरा गया। वास्तव में, उसने कुछ कुओं को ही बनाने का आदेश दिया था। बचा हुआ धन उसने अपनी सुख- सुविधाओं पर व्यय कर दिया। अब तक राजा भी तेनाली राम की बात का अर्थ समझ चुके थे। वे गृहमंत्री पर क्रोधित होने लगे, तभी तेनाली राम बीच में बोल पड़ा "महाराज! इसमें इनका कोई दोष नहीं है। वास्तव में वे जादुई कुएँ थे, जो बनने के कुछ दिन बाद ही हवा में समाप्त हो गए।" अपनी बात समाप्त कर तेनाली राम गृहमंत्री की ओर देखने लगा। गृहमंत्री ने अपना सिर शर्म से झुका लिया।

राजा ने गृहमंत्री को बहुत डाँटा तथा उसे सौ और कुएँ बनवाने का आदेश दिया। इस कार्य की सारी ज़िम्मेदारी तेनाली राम को सौंपी गई।

इस कहानी से मैने सीखा कि..

....

....

अनुच्छेद लेखन

छुट्टी का एक दिन

संकेत : बच्चों यहाँ कुछ संकेत दिए गए हैं, इन्हें पढ़कर अनुच्छेद लिखिए।
छुट्टी का दिन कैसा लगता है? छुट्टी के दिन कितने बजे सोकर उठते हैं? नाश्ते में क्या खाते हैं? कौन–कौन से खेल खेलते हैं? गृहकार्य कब करते हैं? घूमने जाते हैं या मित्रों के साथ खेलते हैं?

....

....

....

....

....

मेरा जन्मदिन

संकेत : बच्चों यहाँ कुछ संकेत दिए गए हैं, इन्हें पढ़कर अनुच्छेद लिखिए।
आपका जन्मदिन कब होता है, क्या–क्या तैयारियाँ करते हैं, किन–किन लोगों को बुलाना चाहते हैं, दावत में क्या खिलाएँगे, कौन–कौन से खेल खेलेंगे, आदि।

....

....

....

....

....

अनुच्छेद लेखन

मेरा मनपसंद खेल

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अपठित गद्यांश

नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः-

गरमी का मौसम था। रिया अपने दोस्त आकाश और संचित के साथ पार्क में खेलने गई। आकाश बोला 'कितना सुहावना दृश्य है–चला पेड़ों के झुरमुट में आँख–मिचौली खेलते हैं।' रिया कुछ सोच में पड़ गई और बोली देखो इन पेड़ों से हमें छाया, ठंडक, शुद्‌ध हवा, लकड़ियाँ, सुंदर फूल–फल आदि अनेक चीज़ें मिलती हैं। इस प्रकार से पेड़–पौधे हमें हर तरह से लाभ पहुँचाते हैं और बदले में हमसे केवल देखभाल चाहते हैं, तो क्या हम उन्हें इतना भी नहीं दे सकते! संचित और आकाश दोनों को रिया की बात बहुत अच्छी लगी। तीनों मित्रों के निश्चय किया कि वे पेड़ों की रक्षा करेंगे।

क) गद्‌यांश के लिए एक शीर्षक लिखिए?

....

....

....

ख) पार्क में खेल रहे बच्चों के नाम लिखिए?

....

....

....

ग) पार्क का दृश्य कैसा था?

....

....

....

घ) पेड़ों से हमें क्या–क्या मिलता है?

....

....

....

ङ) पेड़–पौधे हमसे क्या चाहते हैं?

....

....

....

च) आपको पेड़–पौधों के बीच रहना कैसा लगता है?

....

....

....

अपठित गद्यांश

हीरा और मोती

हीरा और मोती दो बैल थे। दोनों आज़ाद होकर घूम रहे थे। रास्ते में उन्हें एक साँड मिला। जिसे देखकर हीरा और मोती के होश उड़ गए। दोनों ने साहस से काम लिया। साँड ने आकर हीरा पर सामने से वार किया तो मोती ने उस पर पीछे से अपने सींगों से चोट की। अपने ऊपर हमला होते देखकर साँड घबराकर भागने लगा। मोती ने कुछ दूर तक उसका पीछा किया, पर हीरा ने उसे रोक लिया। दोनों बैल अब बहुत खुश थे। आगे चले तो रास्ते में मटर का खेत दिखाई दिया। हरे–हरे मटर देखकर उनकी भूख तेज़ हो गई। वे खेत में घुसकर मटर खाने लगे।

क) हीरा और मोती कौन थे?

....

....

....

ख) किसे देखकर हीरा और मोती के होश उड़ गए?

....

....

....

ग) अपने ऊपर मुसीबत आई देखकर हीरा और मोती ने क्या किया?

....

....

....

घ) साँड ने किस पर वार किया?

....

....

....

ङ) हीरा और मोती को रास्ते में क्या दिखाई दिया?

....

....

....

अपठित गद्यांश

नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः-

एक बार गाँधीजी से मिलने जापान से एक आदमी आया। उसने उन्हें चीनी मिट्टी का एक खिलौना भेंट दिया। गाँधीजी को खिलौना बहुत पसंद आया। वे उसे अपने साथ रखते थे, जहाँ जाते, उस खिलौने को साथ ले जाते। काम करते समय भी उस खिलौने को अपने सामने रखते थे। खिलौना देखने में बहुत ही साधारण था। तीन बंदर थे। एक बंदर ने अपना मुँह, दूसरे ने अपनी आँखें तथा तीसरे ने अपने कान हाथ से बंद कर रखे थे। बापू कहते थे कि–जिस बंदर ने मुँह बंद कर रखा है वह सिखाता है कि, 'बुरा मत बोलो'। दूसरा बंदर सिखाता है कि 'बुरा मत देखो'। तीसरा बंदर सिखाता है कि 'बुरा मत सुनो'।

क) गाँधीजी को भेंट में क्या मिला?

....

....

....

ख) गाँधी जी से मिलने कौन आया था?

....

....

....

ग) खिलौना किस चीज़ का बना था?

....

....

....

घ) खिलौना देखने में कैसा था?

....

....

....

ङ) गाँधीजी के तीन बंदर हमें क्या सिखाते हैं?

....

....

....

कहानी लेखन

चित्र को ध्यान से देखिए और अपने शब्दों में कहानी लिखिए:-

शीर्षकः

....

....

पात्रों के नामः

....

....

कहानीः

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षाः

....

....

कहानी लेखन

चित्र को ध्यान से देखिए और अपने शब्दों में कहानी लिखिए:-

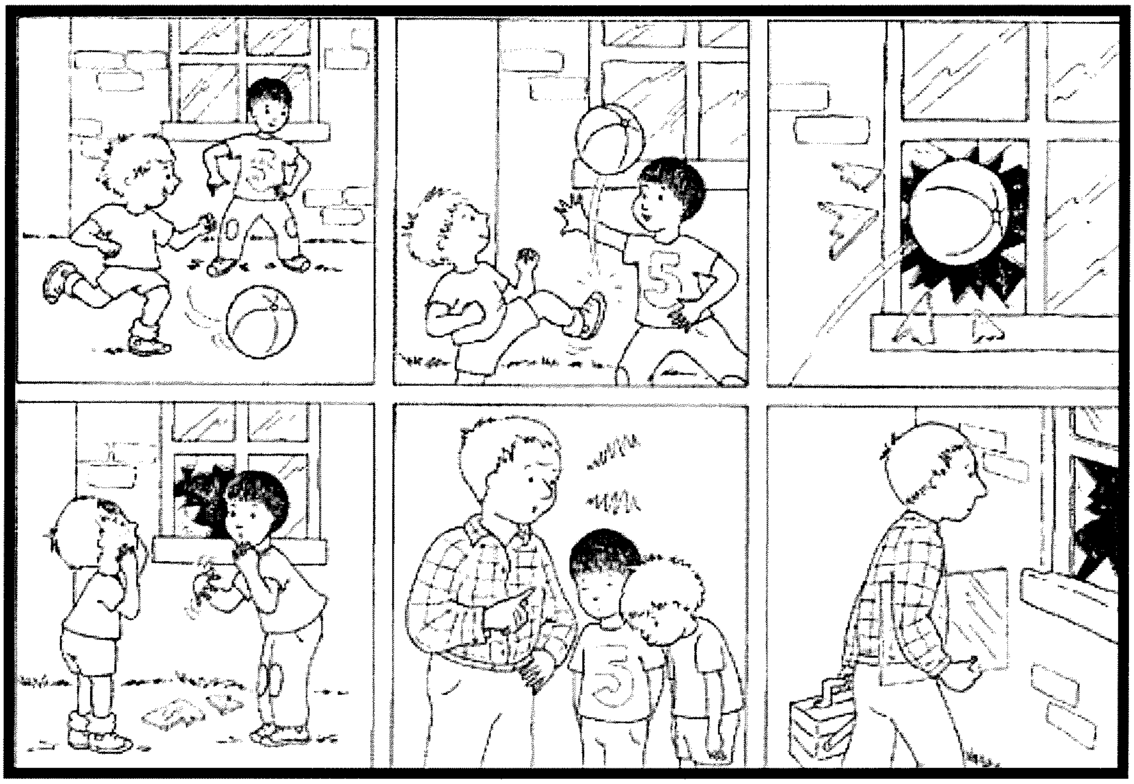

शीर्षक:

....

पात्रों के नाम:

....

कहानी:

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षा:

....

....